# सरहुल
## और उराँव समाज

आलेख

डॉ. फेदोरा बरवा

*डॉ. (श्रीमती) फेदोरा बरवा ने बरकतउल्ला विश्वविद्यालय से एम.ए. बी.एड. करने के पश्चात जवाहर नवोदय विद्यालय में 14 वर्ष तक अध्यापन किया। वर्तमान में वे ठा. छेदीलाल शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय जांजगीर (छ.ग.) में सहायक प्राध्यापक के रूप में कार्यरत हैं।*

उराँव भारत का एक प्रमुख आदिवासी समुदाय है जिसकी अपनी भाषा धर्म और अपनी संस्कृति है। उराँव सहज और निश्चिंत प्रकृति का होता है। जीवन के मूल्य को वह अच्छी तरह समझता है। उनके इस दृष्टिकोण की विशेषता उनकी व्यावहारिकता में झलकती है। हर संभव हर परिस्थिति में सभी से मेल और सामंजस्य स्थापित करने की उत्कण्ठा वह मूल प्रेरणा है जो उराँवों के व्यवहार और संबंधों को संचालित करती है। अतः उनके सामाजिक और आम जीवन का मुख्य लक्षण मित्रभाव है, यही कारण वह सभी पड़ोसियों, मनुष्य और पशु जगत, प्रकृति और अदृश्य शक्तियों से भाईचारा एवं साहचर्य का जीवन बिताता है। यही कारण है कि पर्व-त्यौहार उनके जीवन का अभिन्न अंग हैं, जिसके माध्यम से वह अपने जीवन के उद्‌गारों को प्रकट करते हैं। चूंकि उराँव आदिवासियों की जीविका का मुख्य साधन कृषि है इसलिए सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन में सालभर पर्व-त्यौहारों का तांता लगा रहता है। जिस प्रकार जीविका के लिए खेती बारी के काम बारहों मास होते रहते हैं, उनसे संबंधित त्यौहार भी मौसम के अनुकूल आते रहते हैं। सरहुल (खद्दी) उराँव आदिवासियों का प्रमुख त्यौहार है जो होली के बाद में मनाया जाता है, जब साल वृक्ष फूलों से लहलहा उठते हैं। यह पर्व फागुन (होली) के बाद शुरू होता है और मई में समाप्त होता है। यह त्यौहार समाज के लिए मात्र मस्ती उमंग का ही त्यौहार नहीं है बल्कि प्रकृति पूजन का त्यौहार भी है। उराँव आदिवासी प्रकृति के उपासक हैं, प्रकृति को वे अपना रक्षक मानते हैं। उनका मानना है कि हमारा जन्म प्रकृति की गोद में हुआ है, प्रकृति ने हमें जीवन दिया है, अपनी गोद में खिलाया है और अपने कोमल आंचल से हमें सुरक्षा प्रदान की है। प्रकृति के बिना तो हम अपने जीवन की कल्पना भी नहीं कर सकते हैं। ऋतुराज के आगमन के साथ ही पूरी कायनात अपना श्रृंगार करना शुरू कर देती है। चारों ओर हरियाली छा जाती है, पेड़-पौधे नये कोपलों एवं फलों से लद जाते हैं। इस महकते वातावरण में लोगों का हृदय आनंद और उमंग से भर जाता है। पूरी प्रकृति एकदम बदले हुए रूप में दिखने लगती है। ऐसे आकर्षक वातावरण में उराँव मानस पटल का प्राकृतिक भंगिमाएँ देखकर प्रसन्नचित होना लाजिमी है। ऐसे मनमोहक परिवेश में उराँव आदिवासी प्रकृति का अभिनंदन कर सरहुल (खद्दी) पर्व मनाते हैं।

उराँव आदिवासी निम्नलिखित आधार पर सरहुल (खद्दी) पर्व को मनाते हैं -

1. *सूर्य के संग पृथ्वी का विवाह*
2. *प्रकृति पूजा*
3. *खद्दी जन्मोत्सव*

सूर्य के संग पृथ्वी के विवाह के पीछे भी एक बडा

ISSN : 2394-3530 VOLUME 3, NO. 4 NOV. 2016

# Swadeshi Research Foundation

# A QUARTERLY JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH

Published by :
**Swadeshi Research Foundation & Publication**
Seva Path, 320 Sanjeevani Nagar,
Veer Sawarkar Ward, Garha, Jabalpur (M.P.) - 482003

# TABLE OF CONTENTS


1. Role of Local Community in Enhancement of Tourism ..... 1-4
   **Mrs. Gunjan Shrivastav**

2. राजनैतिक परिप्रेक्ष्य में नेतृत्व का महत्व ..... 5–8
   **डॉ. जयश्री दीक्षित, रितु मिश्र**

3. आदिवासी बालिकाओं की सामाजिक पृष्ठभूमि एवं शिक्षा ..... 9–15
   **ज्ञानेन्द्रधर बड़गैया**

4. छोटा नागपुर के उरॉव जनजातियों का विवाह पूर्व के तीन संस्कार ..... 16–22
   **डॉ. ए. तिर्की**

5. Good governance and holy gita ..... 23-32
   **Khyati Mishra**

6. जबलपुर संभाग का आर्थिक एवं सामाजिक स्वरूप ..... 33–35
   **प्रदीप ग्वालिया**

7. सामाजिक गतिशीलता में परिवर्तन ..... 36–38
   **आरती झारिया,**

8. महिला सशक्तिकरण में संवैधानिक प्रावधान की भूमिकाः एक अध्ययन ..... 39–43
   **डॉ. सदन मरावी**

9. औद्योगीकरण में पूँजी बाजार का महत्व ..... 44–45
   **डॉ० किरण सिंह,**

10. नर्मदा नदी का आध्यात्म, भौगोलिक स्थिति एवं वैज्ञानिक परिणाम : मार्मिक शोध ..... 46–53
    **अर्जुन शुक्ला 'गोल्ड मेडलिस्ट', शिवानी राय 'सिल्वर मेडलिस्ट'**

11. Effect of Nitrogen based fertilizers on the testis of Fresh water teleost Channa ..... 54-56
    punctatus during Spawining period
    Dr. Namrata Shrivastava

12. किसान जीवन के सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक पहलू 95–1
*सुशील कुमार तिवारी*
13. हिन्दी कविता और किसान जीवन 102–1
*डॉ. राजन यादव*
14. कृषि, कृषकों की आवश्यकता बनाम विवशता : कृषक आंदोलन के आइने में 110–1
*डॉ. द्वारिका प्रसाद चन्द्रवंशी*
15. कृषक जीवन और हिंदी कविता : जनकवि नागार्जुन 117–1
*अजय कुमार तिवारी*
16. मीडिया के आइने में भारतीय किसान 123–1
*डॉ. आँचल श्रीवास्तव*
17. सिनेमा और साहित्य में भारतीय किसान 132–1
*डॉ. मंजुला पाण्डेय*
18. प्रेमचन्द युगीन हिन्दी उपन्यास और भारतीय किसान 136–14
*डॉ. कुसुम माधुरी टोप्पो*
19. नक्सलबाड़ी का किसान आन्दोलन और हिंदी कविता 144–15
*विजयलक्ष्मी सिंह*
20. किसान आंदोलन और हिंदी साहित्य 154–15
*प्रियंका*
21. समकालीन हिंदी कविता में किसान की जिजीविषा और संघर्ष चेतना 159–16
*डॉ. सपना तिवारी*
22. हिन्दी उपन्यास और भारतीय किसान 168–17
*प्रदीप कुमार*
23. हिन्दी साहित्य के फलक पर जगदीश चन्द्र के हलधर 172–17
*बृजेश कुमार त्रिपाठी*
24. समकालीन हिन्दी ग़ज़ल में किसान–जीवन 179–18
*डॉ. साएमा बानो*
25. हिन्दी कविता में किसान 186–19
*डॉ. बारेलाल जैन*
26. किसानों की मुक्ति का सवाल और बाबा नागार्जुन के उपन्यास 193–19
*डॉ. शरद कुमार द्विवेदी*

NAAC

Aug. 2016 Volume - 3, No. - 3 ISSN : 2394-3580

# Swadeshi Research Foundation

# A QUARTERLY JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH

Published by :
**Swadeshi Research Foundation & Publication**
Seva Path, 320 Sanjeevani Nagar,
Veer Sawarkar Ward, Garha, Jabalpur (M.P.) - 482003

Swadeshi Research Foundation A Quarterly Journal of Multidisciplinary Research
ISSN : 2394-3580
Aug 2016 Vol- 3, No. 3

# Table of Contents

1. Domestic Violence In Indian Scenario ..... 1- 2
**Mrs. Bhawna Sharma, Dr. Rita Arora**

2. A Study of time value of money ..... 3 - 6
**Dr. Jitendra Kumar Yadav**

3. पौराणिक वास्तु में गृह–पर्यावरण–विचार ..... 7–12
**डॉ. रीझन झारिया,**

4. भारत की अर्थव्यवस्था है कृषि अर्थव्यवस्था ..... 13–25
**डॉ. देवेन्द्र विश्वकर्मा**

5. वैश्वीकरण का ग्रामीण कृषि पर आर्थिक प्रभाव ..... 26–32
**कृष्ण कुमार कोल**

6. भारतीय कृषि में आधुनिक तकनीक ..... 33–36
**सत्येन्द्र कुमार महोबिया**

7. Performance of National agriculture insurance scheme in India with special reference to Madhya Pradesh ..... 37-45
**Richa Khanna, Dr. Sadhana Srivastava**

8. कुटीर उद्योगों का विकास ..... 46–49
**श्रीमति रश्मि पटैल**

9. Analysis of River Water Quality: A Review ..... 50-56
**R.K. Shrivastava and Manisha Kumariya**

10. गीत–काव्य का स्रोत : ऋग्वेद ..... 57–58
**श्री सच्चिदानंद दुबे**

11. महाकवि भट्टिकाव्य में धर्म ..... 59–62
**सागर कुमार पाण्डेय सोनवानी,**

12. पश्चिमी राजस्थान में शासन सुधार के लिए हिन्दी समाचार पत्रों की भूमिका ..... 63–65
**धर्मेन्द्र कुमार दुबे**

13. चैतन्य महाप्रभु के अनुसार भक्ति का स्वरूप ..... 66–70
**डॉ. शैलेन्द्र चौधरी**

14. बीसवीं सदी के उत्तरार्द्ध में छ.ग.के जशपुर जिले में कैथोलिक चर्च का शिक्षण कार्यों में योगदान ..... 71–74
**डॉ. ए. तिर्की, डॉ.. श्रीमती सी. अनुपा तिर्की**

RSIRJLE GWALIOR
Research Scholar - An International Refereed Journal of Literary Explorations
Research Scholar
An International Refereed e-Journal of Literary Explorations
ISSN 2320 – 6101
www.researchscholar.co.in
Impact Factor 0.998 (IIFS)

# IT'S THERE

**Dr. Shrabani Chakravorty**
Asstt Professor, English
Govt JPV Arts and Comm College
Bilaspur, Chhatisgarh 495001
chakravorty.shrabani@gmail.com

It's there deep within my heart,
A beautiful feeling that can never depart.
Like the splash of the first monsoon showers
Drenching my body and soul with heavenly power.

It's like a star studded sky
On a new moon
It's like a pious hymn
Sung early at dawn.

It's like intoxicating music
Always enchanting me deep into its lyric.
It's like the graceful steps of a dance
Gripping my soul in a trance.

It's there in a child's innocent smile
And also in an old woman's blessings.

It's there in the air
When I hear my name
From the love of my life.
It's there in the giggles of my children when
Their naughty faces makes my anger soften.

It's there in the memories of my old friends
Pain that weakens the heart, it mends.

It's there in my work
At home and in other spheres
Made closer to worship
By helping the needy and the poor.

It's a wonderful feeling
To unite this world into a string
Brimming with harmony and peace
Filling the cup of life with bliss.

8 Rabindranath Tagore, *Gitanjali* PP. 10-11

9 *श्रीमद् भगवदगीता,* (III-8) (गीता प्रेस गोरखपुर 2009) पेज 4

10 Rabindranath Tagore, *Gitanjali* Ibid., P. 11

11 Rabindranath Tagore, *Sadhana,* P. 103

12 *श्रीमद् भगवदगीता,* (II 38, 48, 56) (गीता प्रेस गोरखपुर 2009) पेज 31, 34, 36

13 Rabindranath Tagore, *Sadhana,* P. 86

14 Rabindranath Tagore, *Gitanjali* p-7



# Makeover Time for English Language Syllabi

**Dr. Shrabani Chakravorty**
Asstt Professor, English
Govt. Bilasa PG Girls College
Bilaspur (C.G.)

The state of Chhattisgarh, and erstwhile part of Madhya Pradesh came into existence on 1st Nov 2000. The state has made great progress in the last decade and has earned many prestigious awards for its rapid infrastructural developments. Its public distribution system and its contribution in area of e-governance have also been lauded. More than 12,700 schools have been added and more than two and a half lakh teachers have been recruited during this period. However as a teacher of English, I wish to share here my genuine concern for the proficiency level of our students in English and also bring to light why the University curriculum requires a total face-lift if the state wishes to keep pace with the rest of the country.

As a part of the unified syllabus that came into force in the state of M.P. English language, Hindi language and General Awareness came to be included under a single umbrella termed the Foundation Course, a compulsory group in all the three undergraduate years. The general awareness component included Aspects of Indian Culture and Heritage, The Development of Science and Technology and the New Economic Developments within our country. All this had to be studied respectively in the three undergraduate years. Students had to obtain passing marks in the aggregate of these three subjects, a relaxation that was fully exploited by the student community. This system of evaluation that was followed for more than a decade did more harm than good

# A Study of Social Issues in Tagore's *Gitanjali*

**Dr. Mrs. Savitri Tripathi**
Professor, Dept. of English
Govt. J.P.V. Arts and Commerce
P. G. College,
Bilaspur, C. G. - 495001
Mob: 09442163536
Email:savitri_tripathi@rediffmail.com

**Udita Shrivastava**
C/o A. K. Shrivastava,
4-Gitanjali Vihar, Nehru Nagar
Phase - II,
Ameri Road, Bilaspur- 495001, C.G.
Mob: 9893273834
Email: udita.shrivastava@rediffmail.com

Rabindranath Tagore (1861-1941) was born and brought up in an atmosphere of tradition and modernity during renaissance India. His patriotic renaissance temperament was full of zeal for international reformation. Richard Church, English writer and critic, has called Rabindranath Tagore the "universal man". (2) His Gitanjali (1910) which won billions of hearts was the proof of his struggle for universal salvation. While patriotism persuaded him to think about national freedom, internationalism motivated him to ponder about human freedom in general. His concept of universal freedom is derived from the great tradition of Indian spiritualism. India has always been the centre of attraction for the world because of its spiritual legacy which was earned by its saints through austerity. It was their faith in the divine that inspired them to love others and this in turn led to solutions to social problems through spiritual practices. Their wisdom guided humanity to realise the need for God in daily life so that they can lead a purposeful life and form a harmonious society. The vision of utopia on earth guided saints like Nanak, Kabir, Mira, Ravidas to reform the society through their devotional literature. They obeyed the divine will and sang in praise of God to acquaint man with the presence of evil in his own character in contrast with the divine. Sanjeev Chatterji opines - "A mixed bag, Gitanjali has several ingredients. One of these

NAAC

17

# भक्तिकालीन कविता
# भारतीय संस्कृति के विविध आयाम
## भाग-4

दो दिवसीय अन्तरराष्ट्रीय संगोष्ठी
2-3 नवम्बर, 2017

पी.जी.डी.ए.वी. कॉलेज (सांध्य)
दिल्ली विश्वविद्यालय

संरक्षक
डॉ. रवीन्द्र कुमार गुप्ता
प्राचार्य

सम्पादक
डॉ. हरीश अरोड़ा
संयोजक, अन्तरराष्ट्रीय संगोष्ठी

साहित्य संचय
ISO 9001:2015
मोबाइल : 9871418244, 9136175560
ISBN No. 978-93-82597-94-0

# अनुक्रम


सम्पादकीय *(भक्तिकालीन कविता : भारतीय संस्कृति की विराट गाथा)* ..... 3

1. वर्तमान संदर्भ में तुलसी की सामाजिक-सांस्कृतिक दृष्टि ..... 13
   दीनदयाल
2. भक्ति आन्दोलन और कबीर ..... 18
   देविन्दर सिंह
3. बुंदेली लोक में कबीर ..... 23
   गजेन्द्र कुमार पाण्डेय
4. भक्तिकालीन कविता और संगीत ..... 26
   गुंजन कुमार झा
5. लोकमानस की महागाथा : रामचरितमानस ..... 30
   स्वीटी अंजलि
6. भारतीय धर्म, दर्शन एवं अध्यात्मक के परिप्रेक्ष्य में रामचरित मानस ..... 33
   जयश्री शुक्ल
7. लोकमानस की महागाथा : श्री रामचरितमानस ..... 38
   विदुषी शर्मा
8. सामाजिक एकीकरण का भाव और कबीर ..... 42
   उपासना
9. भक्ति आन्दोलन और कबीर की क्रांतिदर्शी चेतना ..... 46
   एम.एल. पाटले
10. लोकजागरण ..... 49
    नगेन्द्र प्रसाद सिंह
11. तुलसी के राम ..... 52
    मंजुलता कश्यप
12. सामाजिक/धार्मिक एकीकरण का भाव और निर्गुण काव्य ..... 54
    मंजुला पाण्डेय
13. भक्ति आन्दोलन और कबीर ..... 58
    राजनंदिनी
14. कबीर और तुलसी के राम ..... 60
    प्रदीप कुमार
15. भक्ति आन्दोलन और कबीर ..... 63
    चैताली सलूजा
16. लोकमंगल एवं समन्वय के प्रबल प्रतिपादक तुलसीदास ..... 67
    एम.एस. वाला
17. सूफी काव्यों में भारतीय संस्कृति ..... 70
    नजमा एम. अंसारी
18. तुलसी के राम ..... 73
    सिंधू हाळदे (रेड्डी) / शीतल बियाणी-यादव
19. महाकवि तुलसीदास की समन्वय साधना ..... 75
    तेजाभाई एन. पटेलिया
20. हिन्दी के कृष्ण भक्त कवियों में भारतीय धर्म-साधना ..... 78
    यशवंत के. गोस्वामी

NAAC

# भक्तिकालीन कविता
# भारतीय संस्कृति के विविध आयाम
## भाग-4

दो दिवसीय अन्तरराष्ट्रीय संगोष्ठी
2-3 नवम्बर, 2017

पी.जी.डी.ए.वी. कॉलेज (सांध्य)
दिल्ली विश्वविद्यालय

संरक्षक
डॉ. रवीन्द्र कुमार गुप्ता
प्राचार्य

सम्पादक
डॉ. हरीश अरोड़ा
संयोजक, अन्तरराष्ट्रीय संगोष्ठी

साहित्य संचय
ISO 9001:2015
मोबाइल : 9871418244, 9136175560
ISBN No. 978-93-82597-94-0

# सामाजिक/धार्मिक एकीकरण का भाव और निर्गुण काव्य

डॉ. मंजुला
शासकी जे. पी. वर्मा स्नात0 कला/वाणिज्य महा
बिलासपुर (छ

अपने विकास की एक विशिष्ट अवस्था में धर्म सामाजिक गुण प्राप्त कर लेता है, और इतिहास की आर्थिक सा
शक्तियों का प्रतिनिधित्व करने वाला बन जाता है। इस प्रकार मध्य युग ने प्रत्येक सामाजिक और राजनैतिक आंदोल
धार्मिक जामा पहनने के लिये विवश किया, फलतः सामाजिक समानता का आंदोलन भक्ति के आवरण में सामने आय
हमारे भक्तिकालीन कवियों की यह विशेषता रही है कि उन्होंने अपने जीवन से लेकर अपनी रचनाओं तक में संस्कृति की
प्रक्रिया को आत्मसात किया है। अपने गुण और परिवेश के सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक जीवन को अभिव्यक्त क
इन क्षेत्रों की मूल प्रक्रिया को व्यंजित किया गया है।

भारत के मध्य युग को सांस्कृतिक साधना का एक फल है संत काव्य। यह चिंतन परक होने के कारण काव्य हो
है, ऐसा मानने वालों के विचार में सामाजिक परिदृश्य मानों शून्य है। इस देश में निर्गुण ज्ञान मार्ग की परंपरा बहुत पुरानी है
की मूल संहिताओं में ही सगुण आत्मज्ञान और निर्गुण आत्मज्ञान के बीज उपलब्ध हो जाते हैं। कपिल ऋषि ने इस
आत्मज्ञान को विशुद्ध तत्वचिंतन मूलक दर्शन का रूप दिया जिसे 'सांख्य' कहते हैं।

सांख्य दर्शन इस देश का सबसे पुराना तत्वचिंतक परक दर्शन है और महाभारत के शांति पर्व के निम्नांकित श्लोक
अपने विश्वास के प्रमाण के रूप में उद्धत करते हैं --

ज्ञानं महद्यद्धि महत्सु राजन्।
वेदेषु सांख्येषु तथैव योगे।।
यच्चापि दृष्टं विविधं पुराणे।
सांख्यागतं तन्निखिंल नरेन्द्र।।

हे राजन बड़े लोगों में जो ज्ञान है, और जो ज्ञान वेद सांख्य और योग शास्त्र में उपविष्ट हैं और जो ज्ञान विविध रूपों
पुराणों में पाया जाता है, वह सभी सांख्य से ही आया है। [1]

निर्गुण सन्त कवियों के आविर्भाव-काल से पहले ऐतिहासिक सामाजिक परिस्थितियाँ क्या थी, यह विचारणीय
1037 ई. के करीब अलबेरूनी भारत आया था, उसके विवरणों से पता चलता है कि धार्मिक विश्वास कई सम्प्रदायों में व
चुके थे। [2] और राजनैतिक परिस्थितियाँ भी अस्थिरता से भरी हुई थी, सामन्त लड़ते थे और जनता को एक या दूसरे का प
लिये बिना कोई चारा नहीं था। [3] ऐसे समय में संत कवियों ने यदि चारण कवियों से भिन्न मार्ग अपनाया तो क्या अचंभा?

डॉ. पीताम्बर दत्त बड़थ्वाल ने अपने निर्गुण कवियों के बहुत बहुमूल्य अध्ययन में गोरखनाथ के किसी शिष्य के ग्र
'काफिर बोध का' एक उद्धरण दिया है :-

हिन्दू मुसलमान खुदाई के बन्दें।
हम जोगी न रखें किस ही के छन्दे। [4]

जब-जब किसी भी देश या जाति के साहित्य में ऐसे सांस्कृतिक आक्रमण या दो संस्कृतियों के बीच संघर्ष होते हैं, तब
सन्तों जैसे मनीषी विचारक उसमें कुछ अलिप्त होकर ही उसके बारे में सोचते हैं।

जिसे आजकल हम संत साहित्य कहते हैं वह वस्तुतः निर्गुण भक्ति मार्ग का साहित्य है। ऐसा विश्वास किया जाता है कि
उत्तर भारत में भक्ति मार्ग को रामानंद ले आये थे और सौभाग्य से उन्हें कबीर जैसा शिष्य मिल गया था। कबीर के अनुयायियों
में यह दोहा प्रचलित है --

भक्ति द्राविण उपजी जाये रामानंद।
परगट कियो कबीर ने सप्तद्वीप नौखण्ड।। [5]

पद्म पुराण के उत्तर खण्ड में जो श्रीमद् भागवत महात्म्य है, उसमें भक्ति के मुख से यह कहलवाया गया है कि मैं द्रविण
देश में उत्पन्न हुई, कर्नाटक में बड़ी हुई, कहीं-कहीं महाराष्ट्र में विहार करती हुई अंत में गुर्जर देश में आकर जीर्ण हो गई। फिर
घोर कलि काल में पाखंडियों में मेरा सिर खण्ड-खण्ड कर दिया और मैं अपने पुत्रों के साथ दुर्बल होकर क्षीण हो गई। अब

ISBN : 978-93-82597-94-0

दो दिवसीय अन्तरराष्ट्रीय संगोष्ठी

2-3 नवम्बर, 2017

NAAC

4



# भक्तिकालीन कविता भारतीय संस्कृति के विविध आयाम

हरीश अरोड़ा
संयोजक एवं सम्पादक

रवीन्द्र कुमार गुप्ता
प्राचार्य

पी.जी.डी.ए.वी. कॉलेज (सांध्य)
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

सौजन्य : केन्द्रीय हिन्दी संस्थान

# भक्ति आंदोलन और कबीर

**श्रीमती चैताली सलूजा**
सहायक प्राध्यापक
शासकीय जे.पी.वर्मा कला/वाणिज्य महाविद्यालय बिलासपुर (छ.ग.)

भागवत धर्म के प्रचार और प्रसार के परिणाम स्वरूप भक्ति आंदोलन का सूत्रपात हुआ। भक्ति आंदोलन ने जन सामान्य को सम्मानपूर्वक जीने का रास्ता दिखाया, आत्मगौरव का भाव जगाया और जीवन के प्रति सकारात्मक, आस्थापूर्ण दृष्टिकोण विकसित किया। इस आंदोलन ने देश की अखंडता और समस्या, देशवासियों के कल्याण तथा मानव के समान अधिकारों की अभिव्यक्ति दी। भक्ति आंदोलन आध्यात्म का एक संक्रमण काल था जिसमें पुराने रीति रिवाज टूट गए और जिसने हर व्यक्ति को अपने स्वभाव के अनुसार ईश्वर से जुड़ने में सक्षम बनाया। भक्ति आंदोलन एक तरह से उस पारंपरिक व्यवस्था का टूटना था, जिसमें इंसान द्वारा ईश्वर की खोज को कर्मकांडों, रीति-रिवाजों, धर्मग्रन्थों में बांध दिया गया था।

के. दामोदरन अपनी प्रसिद्ध पुस्तक 'भारतीय चिंतन परंपरा' में भक्ति आंदोलन के उदय पर लिखते हैं - ''भक्ति आंदोलन उस समय आरम्भ हुआ था, जब स्वार्थों के खिलाफ संघर्ष एक ऐतिहासिक आवश्यकता बन गया था। जनता जो युगों पुराने अंधविश्वास और दमन-शोषण के बावजूद हतोत्साह नहीं हुई थी, जगाया जाना और अपने हितों तथा आत्मसम्मान की भावना के लिए उसे एक किया जाना आवश्यक था। स्थानीय बोलियों और क्षेत्रीय भाषाओं को, एक स्थापित करने वाली राष्ट्र भाषाओं के स्तर पर उठाना था।''[1]

## भक्ति आंदोलन के उदय की परिस्थितियाँ

**राजनीतिक परिस्थिति** - उत्तर भारत में 1325 से 1526 ई. तक तुगलक वंश, सैयद वंश तथा लोदी वंश का शासन रहा। मुहम्मद बिन तुगलक, फीरोजशाह तुगलक, सुल्तान महमूद शाह तक तुगलक वंश का शासन रहा। तदुपरांत दिल्ली में सैयद वंश की स्थापना हुई जो 1541 ई. तक चलता रहा। लोदी वंश का सर्वाधिक प्रभावशाली सुल्तान इब्राहीम लोदी था, जिससे 1526 ई. में बाबर ने पानीपत के मैदान में युद्ध किया। भक्तिकाल के द्वितीय चरण में मुगलों का शासन रहा। बाबर, हुमायुँ, अकबर, जहाँगीर, शाहजहाँ के शासन काल तक भक्तिकाल की सीमा है। इस काल के अधिकांश शासकों में धार्मिक सहिष्णुता नहीं थी। हिंदु-मुस्लिम जनता में भी सद्भाव नहीं था। राजनीतिक दृष्टि से भले ही हिंदुओं का पराभव हो गया था, किंतु वे अपने को छोटा मानने को तैयार न थे। दोनों सम्प्रदायों के धर्माचार्य भी उनके विद्वेष को बढ़ाने में योग देते रहते थे।

**सामाजिक परिस्थिति** - वर्ण व्यवस्था में आस्था रखने वाले हिंदु छुआछूत में विश्वास रखते थे, उनमें ऊँच-नीच की भावना विद्यमान थी। हिंदु और मुसलमानों में परस्पर आत्मीयता नहीं थी। हिंदु कन्याओं को सम्पन्न मुसलमान क्रय करके या अपहरण करके अपने घर में ले आते थे। स्त्रियों को अधिकार प्राप्त नहीं थे। उन्हें दूसरे दर्जे का नागरिक माना जाता था। परदा प्रथा उस युग में खास आवश्यक बन गई थी। हिंदुओं में संयुक्त परिवार प्रथा थी। साधु-संतों में पाखंड, आडंबर अधिक व्याप्त था। मुसलमानों के साथ दीर्घकाल तक सम्पर्क रहने के कारण वास्तुकला, चित्रकला एवं संगीत के क्षेत्र में इन दोनों में आदान-प्रदान होने लगा था।

**धार्मिक परिस्थिति** - बौद्ध धर्म विकृत होकर हीनयान एवं महायान शाखाओं में बहुत पहले बंट चुका था। वज्रयानियों को ही सिद्ध कहा गया। महायान सम्प्रदाय ने जनता के निम्न वर्ग को जादू-टोना, अभिचार, तन्त्र-मन्त्र, चमत्कार दिखा कर प्रभावित कर लिया और धर्म के नाम पर वाममार्ग को अपना कर मद्य, मांस, मैथुन, मुद्रा को ग्रहण कर लिया। नाथों एवं सिद्धों में कर्मकांड के स्थान पर गुरु को महत्त्व दिया गया। ईश्वर को घट-घट व्यापी एवं निराकार माना गया। भक्तिकाल में प्रवर्तित संत मत की धार्मिक भूमि सिद्धों और नाथों ने ही तैयार कर दी थी।

मुसलमान मूर्तिपूजा के विरोधी थे तथा मूर्ति भंजन में विश्वास रखते थे। वे माला फेरते थे, हज यात्रा करते थे, मस्जिद में अजान देते थे। हिंदुओं और मुसलमानों में धर्म का बाह्याडंबर तो था, किन्तु आंतरिक शुद्धि का अभाव था।

### भक्ति आंदोलन का उदय एवं विकास

लगभग सातवीं शताब्दी में भक्ति आंदोलन तमिलनाडु में शुरू हुआ और कर्नाटक, आंध्रप्रदेश, महाराष्ट्र और बंगाल से होते हुए यह पूरे उत्तर भारत में फैलता गया। तिरूनावक्करसु को लोग अप्पा के नाम से बुलाते थे, जिसका मतलब पिता होता है, उनसे

वर्ष-1, अंक-2, जुलाई-दिसम्बर 2017

RNI-CHHBIL00962

ISSN No. 2456-3625

अर्द्धवार्षिक

# उराँव झरोखा

Email : oraonjharokha@gmail.com
Website: oraonjharokha.co.in
Call : 7898008766, 8871102898

(एक चिंतन, संघर्ष, सशक्तिकरण)

बिलासपुर (छ.ग.) पृष्ठ संख्या = 72+4

मुख्य आकर्षण

आप पढ़ रहे हैं

स्वच्छ भारत
एक कदम स्वच्छता की ओर

उराँव समाज में संगोत्र विवाह वर्जित.....पेज न.14-15

सरकारी मुआवजा क्षतिपूर्ति आपदा प्रबंधन पेज न. 40–49

Where is our Oraon Youth going?? "Kidhar"?? Page No. 11-13

आदिवासियों के हित में आदिम जाति एवं जन जाति विकास मंत्रालय के दायित्व पेज न. 40 –49

उराँव समाज की सर्वाधिक लोकप्रिय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर ख्याति प्राप्त

नं.1 पत्रिका

"उराँव झरोखा"

You are reading "Oraon Jharokha" Oraon Community's The Most Popular & Globally Reputed

No.1 Magazine

अंतर्राष्ट्रीय स्तर के निर्धारित मानक के अनुरूप प्रकाशित पत्रिकाओ हेतु जारी क्रमांक

ISSN : 2456-3625

I-International S- Standard S-Serial N- Number

भारत सरकार के सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय में समाचार पत्र के पंजीयक द्वारा पंजिकृत रजिस्ट्रेशन क्रमांक

RNI : CHHBIL00962

मूल्य-120 रुपये

# अनुक्रमाणिका

ISSN-2456-3625


| क्र. | शीर्षक | | पृष्ठ संख्या |
|---|---|---|---|
| 1. | संपादक मंडली | | 1 |
| 2. | अनुक्रमाणिका | | 3 |
| 3. | संपादकों की कलम से..... | | 4 |
| 4. | संपादक के नाम पत्र | | 5 |
| 5. | गुणवतापूर्ण शिक्षा का अधिकार | – आनंद कुमार कुजूर | 6–7 |
| 6. | नदी का दूसरा किनारा | – सुशील खलखो | 8–10 |
| 7. | Where is our Oraon Youth going?? "Kidhar"?? "Eika:ttra"?? | – Dr. Seraphinus Kispotta | 11–13 |
| 8. | उराँव समाज में संगोत्र विवाह वर्जित तथा उसके वैज्ञानिक आधार | – डॉ. सी. अनुपा तिर्की, डॉ. ए. तिर्की | 14–15 |
| 9. | जागते रहिये | – निर्मल मिंज | 16–20 |
| 10. | अस्तित्व पर मंडराता खतरा | – डॉ. विश्वासी एक्का | 21–22 |
| 11. | कुँड़ुख़ लोकगीतों में जीवन–मूल्य | – डॉ. (श्रीमती) इसाबेला लकड़ा | 23–25 |
| 12. | हमारा नेता कैसा हो ? | – अथनास किस्पोट्टा | 26–30 |
| 13. | " मां बाप का आदर करें " | – ज्योति किरण मिंज | 31–33 |
| 14. | जनजातीय क्षेत्रों में पर्यटन | – डॉ. श्रीमती सुशीला एक्का | 34–37 |
| 15. | और डेढ़ साल बाद | – सुश्री. नवीता कुजूर | 38–39 |
| 16. | छत्तीसगढ़ शासन राजस्व एवं आपदा प्रबंधन विभाग | – श्री वीरेन्द्र लकड़ा | 40–49 |
| 17. | रिश्तों के नाम | – आनन्द कुमार कुजूर | 50–51 |
| 18. | आदिवासियों की संस्कृति एवं धार्मिकता | – फा. अमृतलाल टोप्पो, ये.स. | 52 |
| 19. | मैंने पूछा चाँद से | – प्रभाती मिंज | 53 |
| 20. | आदिम जाति तथा अनुसूचित जाति विकास विभाग | – आनन्द कुजूर | 54–55 |
| 21. | कुँड़ुख़ उराँव प्रगतिशील समाज छत्तीसगढ | – अपील / निवेदन पत्र | 56 |
| 22. | उराँव झरोखा आयोजित भावी योजनाएँ | | 57 |
| 23. | A Study of Relationship between Spiritual Intelligence And adjustment in Relation... | – Sonia Sharma -Neeru Sharma | 58–63 |
| 24. | सेंट भिन्सेंट पलोटी चर्च में युवा सम्मेलन | – डॉ. सेराफिनुस किस्पोट्टा | 64–65 |
| 25. | बेथनी कॉलेज ऑफ नर्सिंग | | 66–68 |
| 26. | लेखकों हेतु निर्देश | | 69 |

IMPACT FACTOR – 4.23
LangLit ISSN 2349-5189
An International Peer-Reviewed Open Access Journal
LangLit Latur (MS) India AIPROAJ

# THE GOLDEN ORB

DR. SHRABANI CHAKRAVORTY
Assistant Professor English
Govt. J.P.V. P.G. Arts & Commerce College
Bilaspur (C.G.) [illegible]

*Imagine a day without the Sun,*
*Bleak, numb and enveloped in darkness.*
*The Golden Orb opens its wings*
*To light up the earth with its brightness.*
*Charioted by its gleaming rays,*
*Treading the long path in sparkling ways.*

*The twittering of birds.*
*The fluttering of butterflies.*
*The buzzing of honeybees.*
*The rustling of leaves.*
*The cow, goat, horse elephants and all.*
*Gear up for the day when Sun rays fall*

*Basking in the Sun for hours on a winter noon.*
*Or floating like the dark clouds against a silver moon.*
*Enjoying a weekend gazing on a sun kissed beach*
*And reflect upon life's blessings with a gleam in both eyes each*

*It's always a pleasure to watch the Sunrise*
*With new hopes, dreams, and harvest to fulfill our life*
*And to watch the soothing and serene sunset*
*Across a village field or a vast seashore.*
*To seek the unfathomable secrets of life*
*And fill our hearts with joys sublime.*

*Imagine a day missing the Sunshine*
*From God above or a radiant smile*
*How can we forget the immense power of Sun?*
*Bringer of new aspirations, joys and hopes.*
*Eternal source of light, energy, power and life*
*Harbinger of earth's beauty to our sight*
*How can we imagine a day without the Sun*
*A thousand splendid blessings the Sunshine brings with its turn*

********

3rd National Conference

# PROSPECTS OF INNOVATION IN LIFE SCIENCES AND SOCIO-ECONOMIC CHALLENGES

(December 2nd- 3rd, 2017)

Organised by

**Department of Zoology**

**C.M.Dubey Post-graduate College, Bilaspur-495001 (C.G.)**

# PROCEEDINGS

## ORGANISING COMMITTEE

*Patron*

**Prof. G.D. Sharma**

Hon'ble Vice Chancellor,

Bilaspur Vishwavidyalaya, Bilaspur (CG)

*Co-Patron*

**Sri Sanjay Dubey**

Chairman

Governing Board, C.M.D. Post-Graduate College

Bilaspur

*Chairman*

**Dr. Deepak Chakraborty,**

Principal, C.M.D. Post-Graduate College, Bilaspur

*Advisory Committee*

**Prof. A.K. Pati**, Vice Chancellor, G.M. University, Sambalpur

**Prof. Sohan Jheeta**, Astrobiology, Open University, UK

**Prof. M.A. Akbarsha**, Director, MGDCC, Bharathidasan University, Tiruchirappalli

**Prof. K.K..Sharma**, Former Vice Chancellor, Ajmer Univ., Ajmer

**Prof. Sandip Malhotra**, University of Allahabad, Allahabad

**Prof. Anil Kumar**, Govt. VYPT PG College, Durg

**Dr. D.S.V.G.K. Kaladhar**, Bilaspur University, Bilaspur

**Dr. D.K. Shrivastava**, Bilaspur

**Dr. Mrs. Renu Bhatt**, Guru Ghasidas University, Bilaspur

**Dr. Mrs. Monika Bhadoria**, Guru Ghasidas University, Bilaspur

**Dr. Sudha Agrawal**, Bhilai

**Dr. Mrs. Renu Maheshwari**, Raipur

**Dr. Mrs. Nisreen Hussain**, Durg

**Dr. Mrs. Hema Kulkarni**, Jamgaon R.

*Local Organising Committee*

Dr. A.N. Bahadur, Dean, BU

Dr. S. Rahalkar, Chairperson, BU

Dr. Rohit Seth, GGU

Dr. Rajesh Rai

Mr. B.S. Raj

Dr. S.K. Vajpai

Dr. Mrs. V.P. Dubey

Dr. (Mrs.) Rashmi Sao

Dr. Venu Achari

## CONVENER

**Dr. V.K. Gupta**

C.M.D. Post-Graduate College, Bilaspur (CG) India

conformation of enzyme catalytic site is helpful to optimize the catalysis in terms of geometry and potential energy with respect to amino acid change. The present research work deals with the study of surfactin synthetase enzyme's 3D structure and sequence of *Bacillus subtilis* 168, retrieved from PDB and NCBI protein sequence database respectively. It contains 3 domains - condensation, adenylation and thioesterase. Adenylate domain contains acyl activating conserved active site, which was considered for *in-silico* mutation by other amino acid. The residues in structural pattern were mutated by the software 'Swiss-PdbViewer (ver. 4.12) present in the region between the residue number 611 to 624 [611Y-I-M-Y-T-S-G-T-T-G-K-P-K-G624] as well as its adjacent residue. The conformational changes at catalytic site were evaluated on the basis of changed potential energy and geometry. Gromas96 force field was used to calculate the molecular energy before and after geometry optimization. Increase or decrease in total energy (inclusive of bonding and non-bonding energy) with respect amino acid change to that of wild type, were the criteria to distinguish between favorable and non–favorable mutations. We observed that mutations at P609R, A610T, T611Q, **I612L, M613F, Y614Q, T615N, S616R, G617E, T618R, T619R, G620N, K621R, P622Q, K623Q**, G624T, N625Q, I626N, are found to be favorable mutations P609Y, A610R, T611L, **I612P, M613Y, Y613K, T615I, S616G, G617P, T618P, T619G, G620P, K621G, P622Y, K623I**, G624Y, N625R, I626P are non- favorable mutations. The reported mutations were subjected to PAST software for PCA and correspondence analysis.

**Oral Presentation – 18**

## Nanotechnology as a tool for water resource management and its potential eco-toxicity: A Review

*Priyanka Tiwari*
*Department of Chemistry, Govt. J P Verma Arts & Commerce PG College Bilaspur, Chhattisgarh, India.*

*E.mail:priyankat0509@yahoo.com*

Quality of fresh water is an important aspect of integrated environmental management and sustainable development. Water is increasingly becoming polluted due to industrialization, urbanization and global climate change. To provide clean water to the growing population is a great challenge. So there is need of water resource management. Nanotechnology is an applied science generating nanoscale materials and processes. It has advantages over conventional methods like: low cost and high efficiency in removing the pollutants. To compare performances of different nanoparticles and figure out promising nanoparticle deserve further development. Literature about current research on different nanomaterials and their application in water treatment and purification has been reviewed in this article along with potential toxicity of nanoparticles in the environment. Understanding of specific risk of nanotechnology is essential before its widespread adoption in various fields.

3rd National Conference

# PROSPECTS OF INNOVATION IN LIFE SCIENCES AND SOCIO-ECONOMIC CHALLENGES

(December 2nd- 3rd, 2017)

Organised by

**Department of Zoology**

**C.M.Dubey Post-graduate College, Bilaspur-495001 (C.G.)**

# PROCEEDINGS

## ORGANISING COMMITTEE

*Patron*

**Prof. G.D. Sharma**

Hon'ble Vice Chancellor,

Bilaspur Vishwavidyalaya, Bilaspur (CG)

*Co-Patron*

**Sri Sanjay Dubey**

Chairman

Governing Board, C.M.D. Post-Graduate College

Bilaspur

*Chairman*

**Dr. Deepak Chakraborty,**

Principal, C.M.D. Post-Graduate College, Bilaspur

*Advisory Committee*

**Prof. A.K. Pati**, Vice Chancellor, G.M. University, Sambalpur
**Prof. Sohan Jheeta**, Astrobiology, Open University, UK
**Prof. M.A. Akbarsha**, Director, MGDCC, Bharathidasan University, Tiruchirappalli
**Prof. K.K. Sharma**, Former Vice Chancellor, Ajmer Univ., Ajmer
**Prof. Sandip Malhotra**, University of Allahabad, Allahabad
**Prof. Anil Kumar**, Govt. VYPT PG College, Durg
**Dr. D.S.V.G.K. Kaladhar,** Bilaspur University, Bilaspur
**Dr. D.K. Shrivastava**, Bilaspur
**Dr. Mrs. Renu Bhatt**, Guru Ghasidas University, Bilaspur
**Dr. Mrs. Monika Bhadoria**, Guru Ghasidas University, Bilaspur
**Dr. Sudha Agrawal**, Bhilai.
**Dr. Mrs. Renu Maheshwari**, Raipur
**Dr. Mrs. Nisreen Hussain**, Durg
**Dr. Mrs. Hema Kulkarni**, Jamgaon R.

*Local Organising Committee*

Dr. A.N. Bahadur, Dean, BU
Dr. S. Rahalkar, Chairperson, BU
Dr. Rohit Seth, GGU
Dr. Rajesh Rai
Mr. B.S. Raj
Dr. S.K. Vajpai
Dr. Mrs. V.P. Dubey
Dr. (Mrs.) Rashmi Sao
Dr. Venu Achari

CONVENER

**Dr. V.K. Gupta**

C.M.D. Post-Graduate College, Bilaspur (CG) India

transcription factor NF-κb. Therefore NF-κb gene and their products have been closely linked with chronic illness. Recent evidences suggest that curcumin, a natural component found in turmeric root has an immense therapeutic potential because of its anti-protozoal, anti-bacterial, anti-inflammatory and anti-oxidant properties. It has been tested for treating various chronic illnesses associated with the brain. It appears that curcumin has immense therapeutic potential of treating inflammatory reactions associated with neural diseases like Alzheimer's disease and Parkinson disease where neuro-inflammation plays a major role in developing the pathology.

**Poster-28**

## IMPACT OF SEWAGE DISPOSAL ON WATER QUALITY OF MURNA RIVER IN SHAHDOL CITY MADHYA PRADESH, INDIA

***Phul Kunwar Singh Rana***

*Department of Zoology, Govt. Degree College, Marwahi Distt. Bilaspur (C.G.)*
*(Research centre - Deptt. of Zoology, Pt. S.N.S. Govt. P.G. College, Shahdol (M.P.)*

Present paper deals physico-chemical characteristics of Murna River at Shahdol were studied. The parameters studied were pH, Electrical conductivity, Total dissolved solids, Total suspended solids, Total hardness, Calcium hardness, Magnesium hardness, Alkalinity, Chloride and Dissolved oxygen. The values of these parameters were found in excessive amounts as prescribed by World Health Organisation (WHO). It can be concluded that the water parameters which were taken for the present study are above the pollution level for surface water which does not satisfy their requirement for the use of various purposes. A brief attempt has been made to study the extent of change in the quality of water in comparison to water quality standards of World Health Organisation (WHO).

**Poster-29**

## ETHICAL AND SOCIAL IMPLICATION OF GENETIC TESTING FOR COMMUNICATION DISORDERS

***Ranju Gupta*** and ***L.P. Miri***
*Govt. J.P. Verma Arts & Commerce P G College, Bilaspur (CG).*
*E.mail: drranju2011@gmail.com*

A numbers of recent studies provide an opportunity to understand issues that are important to consumers with hearing loss and also serve as a starting point for the process of public education where community concerns related to ethical and legal issues can be addressed. Several studies have documented the interest of hearing and deaf parents in using genetic information for planning purposes, not just for reproductive decision making (Brunger et al. 2000, Hewison and Mucller, 2001, Krantz & Li, 2007). While there has been a very recent trend for increased interest and support for genetic evaluation and testing from the deaf community, deaf adults have continued

RNI NO.:CHHHIN2009/28197

पर्यावरण संरक्षण, ग्रामीण विकास एवं समाज कल्याण को समर्पित

# सुंदर-सुभेष

शोध पत्रिका

ISSN:0976-9552 An International referred research journal

वर्ष–9, अंक 1+2+3, जन.+फर.+मार्च 2017

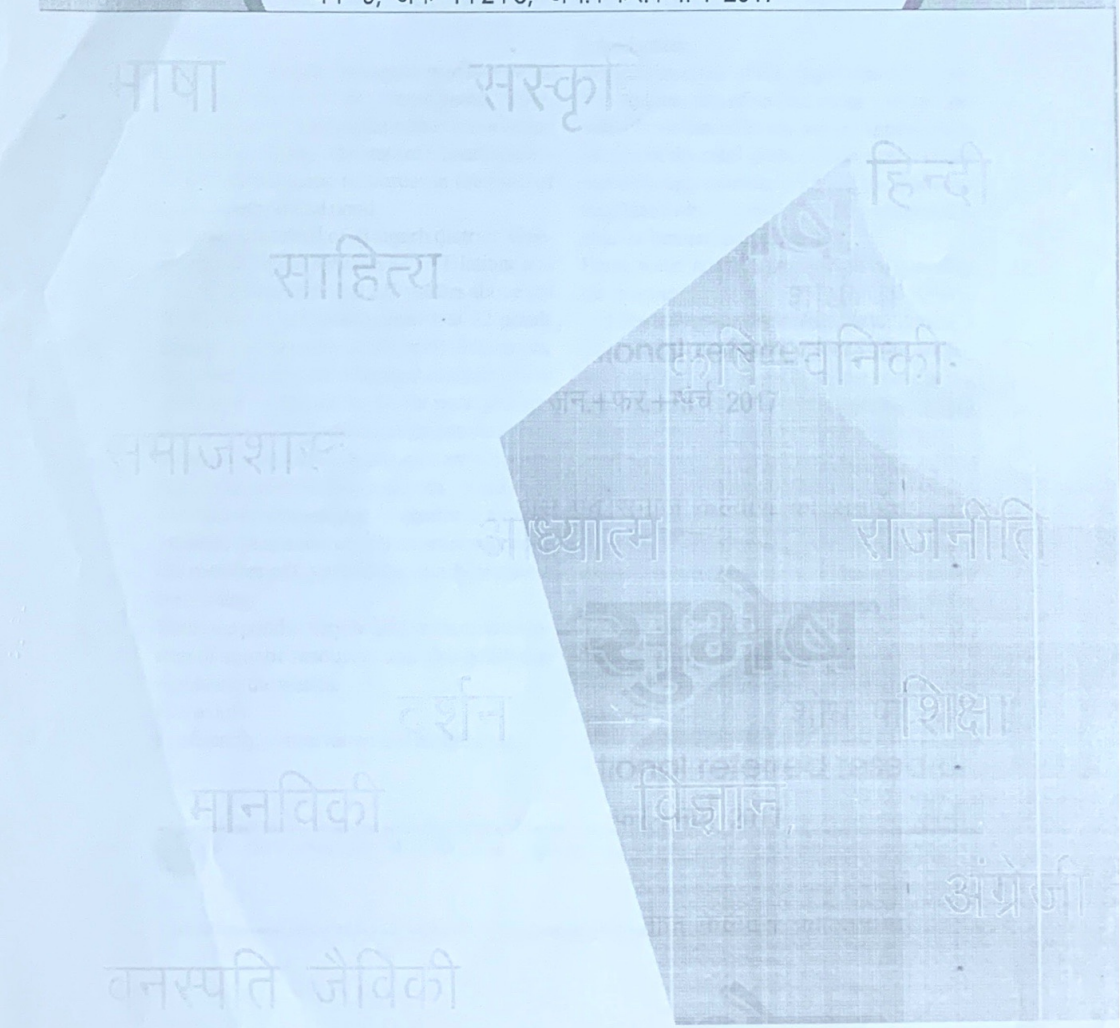

Annexe

# Ecological Studies on Bhagat Pond of Kharsia (C.G.)

[#]Miri, L.P. and [##]Gupta, Ranju
[#]Assistant professor, (Zoology) Govt. J.P. Verma P.G. College, Bilaspur (C.G.)
[##]Assistant professor, (Zoology) Govt. J.P. Verma P.G. College, Bilaspur (C.G.)

Abstract
Pond is eco-friendly management to harvest the rain water to check the ground water depletion and also very helpful in the conservation of the biodiversity. The state of Chhattisgarh is very rich in aquatic resources in the form of river, reservoir and pond.
Kharsia is a tehsil of Raigarh district. Geographically it lies between 83"7$^0$ E latitute and 21"58$^0$N longitude and 220 meters above sea level. The tehsil headquarter has 32 ponds spread over an area of about 61.8 hactares. The datas for physic-chemical analysis of soil and water are favorable for the pond productivity. There are 36 species of phytoplanktons, the members of cholorophyceae are dominating; 39 species of zooplanktons, member of Rotifera are dominating; 51 aquatic weeds are present; 34 species of fishes were recorded the member of Cyprinideae family are most dominating.
Thus, the pond is very helpful in the conversation of aquatic resources and also helpful in regulating the wastes.
Keywords:
Ecofriendly, conservation and biodiversity.

Introduction:
Water is an elixir of life. It governs the evolution and function of inverse on the earth hence, water is mother of living world. Approximate 96.5% of the total global water is salt water and only Approximately 3.5% is the fresh water. Out of which only 0.3% of the water available for human consumption.
Fresh water has become a scare commodity due to over exploitation and pollution (Ghose and Basu, Gupta and Shukla, 2006; Patil and Tijare, 2001; Singh and Mathur, 2005). Industrial sewage and municipal wastes are being continuously added to water reservoir, affect physico-chemical quantity of water making them unfit for use of livestock and other organisms (Dwivedi and Pandey, 2002).
Water quality assessment generally involves analysis of physico-chemical, biological and microbiological parameters and reflects on a biotic status of the ecosystem (IAAB, 1998; Kulshrestha and Sharma, 2006; Mulani et al., 2009).
The present work deals with the investigation of physico-chemical and biological parameters of Bhagat pond of Kharsia. Monthly periodical studies were carried out at three stations

# राजनीति विज्ञान

# (POLITICAL SCIENCE)

2


*लेखिका*

डॉ. (श्रीमती) माया यादव

एम. ए., पी-एच. डी.

सहायक प्राध्यापिका (राजनीति विज्ञान)

शासकीय बिलासा कन्या महाविद्यालय

बिलासपुर (छत्तीसगढ़)



2017

ओरिएण्टल बुक सेन्टर

रायपुर

# स्नातकोत्तर हिन्दी विभाग

राष्ट्रसंत तुकड़ोजी महाराज नागपुर विश्वविद्यालय, नागपुर

नैक द्वारा पुनर्मूल्यांकित ''अ'' श्रेणी प्राप्त

## अंतरराष्ट्रीय शोध संगोष्ठी

एवं

## भारतीय हिन्दी परिषद् का 43 वाँ अधिवेशन

# साहित्य और मीडिया : वर्तमान संदर्भ

**7, 8 एवं 9 सितम्बर 2017**

# अनुक्रम


भारतीय हिन्दी परिषद, इलाहाबाद की कार्यकारिणी - एक परिचय ............

हिन्दी विभाग - एक परिचय ............

समसामायिक साहित्य और जनसंचार माध्यम ............ प्रो. पवन अग्रवाल ............

साहित्य और मीडिया का द्वंद्व ............ डॉ. नरेन्द्र मिश्र ............

वेब मीडिया हिंदी भाषा और साहित्य की नई दिशाएँ ............ प्रो. शैलेन्द्रकुमार शर्मा ............

कमलेश्वर के लघु उपन्यास 'आगामी अतीत' पर आधारित 'मौसम' फिल्म ............ प्रो. चम्पा सिंह ............

सोशल मीडिया और हिन्दी साहित्य ............ डॉ. हरेकृष्ण तिवारी ............

साहित्य और मीडिया : वर्तमान सन्दर्भ ............ इमरान अंसारी ............

जनसंचार और समाज ............ प्रो. प्रेम सुमन शर्मा ............

सोशल मीडिया के साहित्यिक सरोकार ............ डॉ. हेमांशु सेन ............

छत्तीसगढ़ी लोकनाट्य ............ प्रो. राजन यादव ............

पत्रकारिता और साहित्य का अन्तर्संबंध ............ डॉ. श्रीमती हरिणी रानी आगर ............

साहित्य और मीडिया : वर्तमान सन्दर्भ ............ डॉ. रमिता गुरव ............

इलेक्ट्रानिक मीडिया साहित्य के नये प्रयोग ............ डॉ. अमित शुक्ल ............

साहित्य और रंगमंच-एक पहेली ............ दीपक प्रसाद (रंगकर्मी) ............

समाज, सत्ता और मीडिया ............ डॉ. चन्द्रकान्त तिवारी ............

हिंदी पत्रकारिता की भाषा ............ डॉ. चन्द्रकुमार जैन ............

वर्तमान संदर्भ में मीडिया की भूमिका ............ शाहीन बानो ............

विज्ञापनों की भाषा एवं संस्कृति ............ शशि गौड़ ............

साहित्य और पत्रकारिता : वर्तमान परिप्रेक्ष्य ............ धीरज कुमार मिश्रा ............

हिन्दी साहित्य और सिनेमा की चुनौतियाँ ............ क्तण ळपतकींत संस ंितउ ............

हिन्दी साहित्य और मीडिया में बदलती स्त्री छवि ............ प्रिया कौशिक ............

लोकतंत्र में पत्रकारिता की उपादेयता : एक अवलोकन ............ प्रमोद कुमार ............

इलेक्ट्रानिक मीडिया : साहित्य के नये प्रयोग ............ रणजीत कुमार विमल ............

दूरदर्शन और हिंदी ............ डॉ. के. संगीता ............

साहित्य और मीडिया - वर्तमान संदर्भ ............ उज्ज्वला व्ही. मोहाले ............

साहित्य और सिनेमा-वर्तमान चुनौतियाँ ............ डॉ. सविता व्ही. रूक्के ............

साहित्य और रंगमच - नई दिशाएँ ............ श्रीमती परिवर्तिका अंबादे ............

साहित्य और मीडिया : अल्पसंख्यक सन्दर्भ ............ खुशब ............

सहित्य एवं जनसंचार माध्यमों में अंतः सम्बंध ............ उमेन्द कुमार चन्देल ............

साहित्य और पत्रकारिता - वर्तमान परिप्रेक्ष्य ............ अजीत कुमार पटेल ............

इलेक्ट्रानिक साहित्य ............ डॉ. अखिलेश कुमार शंखधर ............

साहित्य का मापदंड - मीडिया ............ डॉ. मधुलता व्यास ............

हिन्दी साहित्य और पत्रकारिता ............ डॉ. रेणू जोशी ............

साहित्य और मीडिया : भाषिक नवाचार ............ डॉ. जय प्रकाश ............

साहित्य और मीडिया : वर्तमान संदर्भ ............ राजनाथ ............

हिन्दी भाषा का राष्ट्रीय स्वरूप और पत्रकारिता ............ डॉ. हरमन्दर सिंह ............

आधुनिक तकनीकी और साहित्य का ब्दलता स्वरूप ............ कविता शर्मा, नीरज भारद्वाज ............

वैश्विक परिप्रेक्ष्य में संचार के क्षेत्र में हिन्दी का बढ़ता वर्चस्व ............ डॉ. मुकेश कुमार शर्मा ............

साहित्यिक कृतियां और सिनेमा ............ डॉ. श्रुति ............

आकाशवाणी और हिन्दी ............ डॉ. सविता यादव ............

भारतीय प्रेस अधिनियम ............ डॉ. श्रीमती कल्याणी जैन, डॉ. ईशा बेला लक

साहित्य और सिनेमा : वर्तमान चुनौतियां ............ पीयूष कुमार ............

मीडिया और साहित्य की सापेक्षता ............ कादम्बिनी मिश्रा ............

हिंदी का नया वितानः सोशल मीडिया ............ राहुल ............

भारतेन्दु की पत्रकारिता : एक चिंतन ............ राजीव कुमार दास ............

साहित्य और मीडिया ............ पीयूष अशोक गुप्ता ............

साहित्य और सोशल मीडिया ............ डॉ. (श्रीमती) जयश्री शुक्ल ............

नारी के उत्थान में इलेक्ट्रोनिक मीडिया का योगदान ............ आर. अरूणा ............

साहित्य और मीडिया वर्तमान : संदर्भ ............ कुंजनलाल लिल्हारे ............

साहित्य और पत्रकारिता : चुनौतियाँ ............ डॉ. मंगलानंद झा ............

मीडिया एवं मानवाधिकार ............ डॉ. आभा सिंह ............

थ–साथ प्राकृतिक सौन्दर्य के भी दर्शन होते हैं।
य की गोद में अनेक सुंदर तालाबों और वृक्षों
प्राकृतिक सौंदर्य चौड़ी एक समतल पहाड़ी पर
र्मित दुर्ग छोटे–छोटे झरनों और जल–प्रपातों से
त हरे वृक्षों और लता कुंजों के बीच, रंग–बिरंगे
ओं की विचित्र आभा और भीनी–भीनी खुशबू
प्राकृतिक सौन्दर्य की अप्रतिम आभा है, वहीं
रों का नृत्य, हिरनों की उछल–कूद, पक्षियों का
धुर–कलरव जो समां बांध देते हैं, उनकी यह
वंतता सत्य की सृष्टि करती है, भव्यता मनमोहक
कला का जो निरावृत सौन्दर्य अंकित है, उसकी
मा अतुलनीय है वास्तव में महान थे वो शिल्पकार
होंने छैनी–हथौड़ी के प्रयोग से ही आस्था से
सक्ति तक जीवन के तमाम संवेगों को पाषाण
उकेर दिया।

र्भ ग्रंथ सूची–

भारतीय सांस्कृतिक धरोहर म.प्र. उच्च शिक्षा अनुदान आयोग, भोपाल १९८७, पृ.५७।
भारतीय सांस्कृतिक धरोहर म.प्र. उच्च शिक्षा अनुदान आयोग, भोपाल १९८७, पृ.१४४।
भारतीय सांस्कृतिक धरोहर म.प्र. उच्च शिक्षा अनुदान आयोग, भोपाल १९८७, पृ.५१।
प्रो. धनंजय वर्मा, हिन्दी भाषा और वैज्ञानिक चेतना, म.प्र. हिन्दी ग्रंथ अकादमी २००७, पृ.५३।
NET
प्रो. धनंजय वर्मा, हिन्दी भाषा और वैज्ञानिक चेतना, म.प्र. हिन्दी ग्रंथ अकादमी २००७, पृ.५७।
प्रो. धनंजय वर्मा, हिन्दी भाषा और वैज्ञानिक चेतना, म.प्र. हिन्दी ग्रंथ अकादमी २००७, पृ.५९।

❑❑❑

36

# समकालीन हिन्दी कहानियों के बदलते प्रतिमान

डॉ० मंजुला पाण्डेय
सहा० प्राध्या० हिन्दी–हिन्दी विभाग

**********

आधुनिक हिन्दी कहानी की कथा–चेतना निरंतर बदलती रही है। वर्तमान कहानी क्रमशः प्रगतिपरक सृजनशील और पूर्णतः स्पष्ट है। स्वतंत्रता के पहले कहानी की रचनात्मकता में राष्ट्रीय विचारधारा सरोबार है लेकिन आजादी के उपरान्त लगातार सब कुछ बदलता जा रहा है। नई परिस्थितियाँ– नया अनुभव सब कुछ कथा साहित्य में जुड़ता रहा है। आजादी के बाद देश में एक नयी प्रकार की चेतना के उदय के साथ ही राजनैतिक, आर्थिक, सामाजिक अनेक प्रकार के बदलाव दृष्टिगत हो रहे हैं। जिंदगी कठिन से कठिनतर होती जा रही है। कारण हर व्यक्ति का अपनी निजत्व अथवा अहं विकसित हुआ जिससे दुरूहता उत्पन्न होना स्वाभाविक ही है। परिणामतः कहानी विधा भी नये संज्ञा रूपों में अभिव्यक्त होने लगी और थोड़े–थोड़े अन्तराल में रचना प्रक्रिया के साथ–साथ शिल्प स्वरूप में भी परिवर्तन दृष्टिगत होने लगा। नये–पुराने के भेद से कहानी को जानने के लिये सिद्यांत पक्ष अपनाये गये और कथा साहित्य जनसामान्य में प्रतिक्रियावादी सोच से जुड़ गया। वैचारिक दृष्टि से कहानियों का क्रमशः विकास मानवीय संवेदात्मक कौंध के साथ हुआ।

आज कहानी विकास की जिस अवस्था में पहुंची है उससे पता चलता है कि कहानी विधा ... जटिल जीवन की तरह समाज से साम्यता ... नियों की

2017 ISSN No. - 2320-

# लोकगीतों की ऐतिहासिक सांस्कृतिक पृष्ठभूमि

डॉ. मंजुला पाण्डेय
स.प्रा. हिन्दी, हिन्दी विभाग
शा.जे.पी.वर्मा. स्नातकोत्तर महाविद्यालय
बिलासपुर ( छत्तीसगढ़ )

मानव सभ्यता के विकास की यात्रा समाज, साहित्य और संस्कृति से होकर जाता है तथा विकास की यह लोक मानस और लोक जीवन की हरियाली से आच्छादित होते रहता है। सामान्य जनता का सरल सहज संस्कार लोक संस्कृति और लोक साहित्य का आधार बनता है। मनुष्य के जन्म से लेकर मृत्यु तक निरंतर सम्पन्न होने क्रिया-कलापों को प्रभावित करने वाली गतिविधियों का गुणा-भाग ही लोक साहित्य और लोक संस्कृति को जीवंत बनात

मनुष्य अपनी वैयक्तिक भूमिका का विसर्जन कर जब समाज-रचना में प्रवृत्त हुआ तो निश्चय ही उसने उ स्वर वृत्तियों को नियंत्रित कर अपने दिनानुदिन के आचरण में कतिपय सीमाएँ स्वीकार की। अब प्रश्न यह उठ कि उसने ऐसा क्यों किया ? उत्तर यह है, कि व्यक्ति के विसर्जन एवं समाज के सर्जन के मूल में मनुष्य की समष्टि कल्याण कामना ही उनका मूल कारण थी।

लोक भावना के उद्‌गम पर यदि हम विचार करें तो हमें वेदों में विशेषतः ऋग्वेद में इस शब्द और भाव उपलब्धि हो जायेगी। ऋग्वेद में लोक शब्द का प्रयोग स्थान और भुवन के अर्थ में होता है।१

एतरेयोपनिषद् में परमेश्वर द्वारा समस्त लोकों के सृजन का उल्लेख है। यहाँ भी लोक शब्द का प्रयोग के अर्थ में हुआ है। परमेश्वर ने अम्भ, मरीचि, मर और जल इन लोकों की रचना की। भारत में आर्यों के आ के उपरान्त आर्य और आर्येत्तर जातियों के मध्य "वेद" वेदेत्तर स्थिति का आविर्भाव हुआ। उस दशा में लोक का प्रयोग "वेदेत्तर" अथवा

# मुक्तिबोध : एक चिंतन

संपादक

डॉ. कृष्णकुमार उपाध्याय
डॉ. (सौ.) नीलम हेमंत विरानी

आस्था प्रकाशन
'क्रिस्टल पैलेस II, 103, आवड़ेबाबू चौक, लश्करीबाग
नागपुर 440017

# अनुक्रमणिका


| | | | |
|---|---|---|---|
| 01 | 'मुक्तिबोध और नैतिकता तथा भद्रता के विरुद्ध का विरोध' | डॉ. आभा सिंह .. | 13 |
| 02 | मुक्तिबोध की अधूरी कहानियों से साक्षात्कार | अरविंद कुमार .. | 20 |
| 03 | मुक्तिबोध की कविता में यथार्थ और स्वप्न की कश्मकश से जूझता भारत | बसंत त्रिपाठी .. | 27 |
| 04 | मुक्तिबोध की कहानियों में रूपक | बेबी गुप्ता .. | 40 |
| 05 | मुक्तिबोध की आत्महन्ता | भरत .. .. | 43 |
| 06 | आधुनिक हिंदी साहित्य में मुक्तिबोध | डॉ. देवेन्द्र शुक्ल .. | 48 |
| 07 | मुक्तिबोध और आधुनिक जीवन मूल्य | डॉ. धीरेन्द्र शुक्ला .. | 57 |
| 08 | मुक्तिबोध के फैन्टेसी सिद्धान्त की रचना प्रक्रिया | दिलीप गिरे्हे .. | 64 |
| 09 | प्रगतिशील कवि मुक्तिबोध | प्रा. एकादशी एस. जैतवार .. | 70 |
| 10 | मुक्तिबोध की कविता में समाज बोध | डॉ. गौकरण प्रसाद जायसवाल .. | 79 |
| 11 | अँधेरे में द्वन्द्व और संघर्ष की फंतासी | डॉ. गीता सिंह .. | 85 |
| 12 | सामूहिक अस्मिता के पक्षधरः मुक्तिबोध | गुर प्यारी यादव .. | 91 |
| 13 | भारतीय समाज राष्ट्र–राज्य और कवि के भविष्य कथन : संदर्भ अँधेरे में | इबरार खान .. | 101 |
| 14 | समकालीन कहानी–शिल्प : मुक्तिबोध का संदर्भ | डॉ. (श्रीमती) जयश्री शुक्ल | 109 |

ISBN : 978-93-85421-26-6

© संपादक


| | | |
|---|---|---|
| प्रकाशक | : | आस्था प्रकाशन<br>'क्रिस्टल पॅलेस II, 103 आवड़ेबाबू चौक<br>लश्करीबाग, नागपुर 440037<br>मो. +919422084304<br>ईमेल : asthaprakashan2015@gmail.com |
| प्रथम संस्करण | : | जनवरी 2018 |
| मूल्य | : | 500/- |
| शब्दांकन | : | आस्था कंप्यूटर्स,<br>नागपुर |
| मुखपृष्ठ | : | डॉ. कृष्णकुमार उपाध्याय |
| मुद्रक | : | श्रीसमर्थ प्रिंटर्स<br>नागपुर |

Muktibodh : Ek Chintan
By Dr Krishnakumar Upadhyay
Dr. Neelam Hemant Virani
1st Edition - January 2018
Rs. 500/-
Publisher : Astha Prakashan, 'Crystal Palace II', 103 Awadebabu Chowk, Lashkaribag, Nagpur 440017
Mobile : +919422084304 E-mail : asthaprakashan2015@gmail.com

# विलुप्त होती हमारी पुरखौती कला

डॉ. फेदोरा बरवा
सहायक प्राध्यापक हिन्दी
शास.जे.पी.वर्मा स्नातकोत्तर कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय बिलासपुर (छ.ग.)

उरॉव जनजाति छत्तीसगढ़ में ही नहीं अपितु भारत की प्रमुख आदिवासी समुदायों में से है। जिनकी अपनी विशिष्ट कला एवं संस्कृति है जिसे वह अब तक संजोए हुए है, किन्तु आज नगरीय प्रभाव एवं भूमंडलीकरण के कारण बहुत सी परंपरागत कलाएं एवं संस्कृतियाँ विलुप्ति के कगार पर हैं जो चिंताजनक है। यदि हम इन पर आज चिंतन नहीं करेंगे तो एक दिन ऐसा आएगा जब इनका नाम केवल शोध के पन्नों में ही रह जाएगा। चूंकि यह जीवंत संस्कृति है इस लिए इसका बने रहना अत्यंत आवश्यक है।

## पटनी (तेल निकालने की देशी मशीन)

पुराने जमाने में प्रत्येक गांव में तेल निकालने के लिए पटनी का उपयोग किया जाता था। पटनी से निकाला गया तेल एकदम ही शुद्ध एवं खालिस होता था जो स्वस्थ्य की दृष्टिकोण से लाभकारी था किन्तु आज हमारे पूर्वजों द्वारा बनाई गई यह मशीन (पटनी) देखने को नहीं मिलता है। अगर कहीं है भी तो उसकी उपयोगिता अब समाप्त हो चुकी है। आज हर व्यक्ति मशीन द्वारा निकाले गये तेल का उपयोग कर रहा है जहां उनसे सरसों, अलसी, जंटगी, डोरी, कुसुम, करंज, मूंगफली के बदले आधी कीमत में तेल बदला जाता है जो हमारे लिये चिंतन का विषय है। जो शुद्धता पटनी से पिरोकर निकाले गये तेल में होती थी वो शुद्धता मशीन से निकाले गये तेल में कहां है।

## गुंगु (देशी छतरी)

उरॉव जनजाति की यह हस्तकला अद्भुत है, जिसका प्रयोग वे सदियों से बारिश एवं धूप से बचने के लिये करते आए हैं। गुंगु लावा पत्ती से बनाया जाता था। खेतों में धान की रोपाई, बीड़ा उखाड़ने के वक्त एवं गाय, बैल, बकरी चराते समय धूप एवं बारिश से बचने के लिए इसका उपयोग किया जाता था। इसका निर्माण लोग स्वयं करते थे जो उनकी कला एवं आत्मनिर्भरता का प्रतीक था। आज ऐसी स्थिति है कि लोग अपनी इस मूल कला को भूलकर बाजार पर आश्रित होते जा रहे हैं। बाजार से पॉलीथीन व छतरी खरीदकर अपनी आत्मनिर्भरता खोते जा रहे हैं।

## पोटोंग

यह भी लावा पत्ती से बनाया जाता है जिसका उपयोग नमक रखने के लिये किया जाता था। प्रत्येक घर में महुआ एवं चिरौंजी से नमक बदला जाता था और इसे सालभर उपयोग के लिये सुरक्षित रखा जाता था। किन्तु यह वस्तु आज किसी के घर में देखने को नहीं मिलता है जो खर्च रहित एवं नमक को सुरक्षित रखने का एक प्रमुख साधन था। यह हस्तकला भी प्रायः लुप्त हो चुकी है।

## चटाई

हमारी माताएँ घर के कामों को निपटाकर फुर्सत के क्षणों में चटाई बनाने का काम करती थीं। जिसे उरॉव भाषा में घेतला एसना कहते हैं। इसके लिये खजूर की पत्ती या परता कींदा (पहाड़ी खजूर का पौधा) का प्रयोग करती थीं। चटाई का उपयोग दरी के रूप में सोने, बैठने एवं पर्व त्यौहारों के अवसर पर किया जाता था। इसके साथ ही गरीबी के कारण जब ठंड के मौसम में रजाई, कम्बल खरीद नहीं पाते थे, तब इसका उपयोग ओढ़ने के लिए भी करते थे किन्तु आज इसके स्थान पर प्लास्टिक चटाई एवं दरी ने अपनी जगह ले ली है। यह कला भी आज विलुप्ति के कगार पर है।

## ढेकी (ढिंकी)

यह हमारे पूर्वजो द्वारा किया गया एक वैज्ञानिक आविष्कार ही है जिसका उपयोग धान कूटने, चावल आटा बनाने, मकाई, सरई एवं महुआ हलवा बनाने इत्यादि कई तरह के कार्य हेतु होता था । ढेकी चलाने से शरीर का व्यायाम हो जाता था और इससे कूटे चावल का यह फायदा होता था कि चावल में जो थाइमिन विटामिन होता है वह नष्ट नहीं होता था जो हमारे स्वास्थ्य के लिय बेहतर है। सबेरे मुर्गे के बांग देने के साथ ही पूरे गांव में ढेकी की मधुर आवाज सुनाई पड़ती थी किन्तु ढेकी की ये मधुर आवाज आज गांव में सुनने को नहीं मिलती है। इसका स्थान अब हॉलर मशीन ने ले लिया है। यह महत्वपूर्ण चीज आज विलुप्ति के कगार पर है।

**मूल्य : सात सौ रुपये मात्र**

**ISBN: 978-81-934493-9-4**

| | | |
|---|---|---|
| पुस्तक का नाम | : | मध्यकालीन नवजागरण काल और संत साहित्य |
| लेखिका | : | डॉ. मंजुला पाण्डेय |
| कापीराइट | : | प्रकाशक |
| प्रकाशन | : | समता प्रकाशन<br>बजरंगनगर, रूरा<br>कानपुर-देहात - 209303<br>मोबाइल : 9450139012, 9936345325, 9455589663 |
| ई-मेल | : | Samataprakashanrura@gmail.com |
| संस्करण | : | प्रथम 2018 ई0 |
| मूल्य | : | 700.00 रुपये मात्र |
| शब्द सज्जा | : | यश ग्राफिक्स, कानपुर |
| मुद्रक | : | साक्षी ऑफसेट यशोदानगर, कानपुर |


---

**MADYAKALEEN NAVJAGARAN KAL AUR SANT SAHITYA**

***By : Dr. Manjula Pandey***

**Price : Rs. Seven Hundred only**

2018

Gurukul International Multidisciplinary Research Journal (GIMRJ)*with* International Impact Factor 4.374
Peer Reviewed Journal

ISSN No. 2394-8426
Thoughts on Mahatma Gandhi
Issue–II, Volume–VIII(I)

# Necessity And Importance Of Gandhi Philosophy In Cantemporary Discussion

## समकालीन विमर्श में गांधी दर्शन की आवश्यकता और महत्व

डॉ. मंजुला पाण्डेय
सहायक प्राध्यापक (हिन्दी)
शास.जे.पी.वर्मा स्नातकोत्तर कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय, जिला–बिलासपुर (छत्तीसगढ)

भारत को आजाद हुए 72 वर्ष हो गए हैं, इसलिए ब्रिटिश शासन और उसे उतार फेंकने के लिए राष्ट्रीय आंदोलन की व्यक्तिगत स्मृति स्वाभाविक रूप से धुंधली पड गई है। लेकिन इसमें भाग लेने वालों के स्वतंत्र भारत के भविष्य के बारे में कुछ स्वप्न थे और इन स्वप्नों की प्रासंगिकता कभी समाप्त नहीं हो सकती।

महात्मा गांधी के चिंतन में 'हिन्द स्वराज' का वही स्थान और महत्व है जो कार्लमार्क्स के चिंतन में कम्यूनिस्ट घोषणा पत्र का, बौद्ध आंदोलन में बज्रसूची का और ज्योतिबा फूले के चिंतन में गरीबी का। इन सबमें पारस्परिक फर्क बहुत है और उनका तुलनात्मक अध्ययन करना यहां उद्देश्य नहीं है। 'हिन्द स्वराज' को लिखे और छपे 100 वर्ष से अधिक हो गए हैं। इस ऐतिहासिक कारण से 'हिन्द स्वराज' की प्रासंगिकता की चर्चा गांधीवादियों के अलावा दूसरे लोग भी कर रहे हैं। चर्चा के और भी कई कारण हैं। आज भारत एक ऐसी जगह पहुंच गया है, जिसे चौराहा, तिराहा आदि नहीं कह सकते, बल्कि सच यह है कि वहां से कोई रास्ता निकलता दिखाई नहीं देता। यों प्रायः सभी राजनीतिक दल उनके साथ जनता के लंबे या संक्षिप्त राजनैतिक अनुभवों के बावजूद यह कह रहे हैं कि जनता को सही रास्ते पर वही ले जा सकते हैं हालांकि जनता उनको परख चुकी है। आज की राजनैतिक परिस्थिति की एक विशेषता यह है कि पिछले दो तीन दशकों में सभी राजनैतिक दल कहीं–न–कहीं किसी न किसी रूप में शासन कर रहे हैं। सबके अनुभव एक जैसे नहीं रहे हैं, केरल और पश्चिम बंगाल में वामपंथी मोर्चे के शासन के साथ जनता के अनुभव अलग तरह के हैं और राज्यों में या केन्द्रों में भी कांग्रेस, भाजपा के अलावा क्षेत्रीय दलों के भी अनुभव रहे हैं। फर्क के बावजूद कुछ लोग हैं जो जनता को यह धारणा देते रहते हैं कि सभी राजनैतिक दल एक जैसे ही हैं। जनता वास्तव में फर्क का विश्लेषण नहीं कर पाती, इसीलिए वह किंकर्तव्यविमूढ़ है। यह प्रश्न जोरदार ढंग से उठ रहा है कि क्या विकल्प है दक्षिण पंथ, वामपंथ, मध्यम मार्ग या क्या ? नेहरू मॉडल, लोहिया–जयप्रकाश मॉडल या संघ परिवार का मॉडल ? गांधीवाद, मार्क्सवाद या अंबेडकरवाद या और कुछ, कौन जनता की जरूरतों का सही रास्ता दिखा सकता है।

इस परिस्थिति में कुछ बचे–खुचे गांधीवादी, सर्वोदयी, कांग्रेसी आदि गांधीजी की प्रासंगिकता बताते हुए 'हिन्द स्वराज' की भी चर्चा करते हैं। यों हकीकत यह है कि गांधी और 'हिन्द स्वराज' की प्रासंगिकता बताने वाले सामाजिक–राजनैतिक कार्यकर्ता और नेता तथा ऐसे ही विद्धतजनों में कोई गांधीजी की कसौटी पर शायद ही गांधीवादी के रूप में खरा उतरे। 'हिन्द स्वराज' को भारत की समस्याओं के समाधान का 'गुटका' समझने वाले बहुत से लोगों ने 'हिन्द स्वराज' को पढा ही नहीं, ऐसा मुझे लगता है। 'हिन्द स्वराज' के समर्थकों को लगता है कि कम्यूनिस्ट गांधीवाद और गांधीजी के विरोधी हैं, लेकिन मैं महसूस करता हूं कि 'हिन्द स्वराज' की अनेक स्थापनाओं और मान्यताओं से बहुतेरे गांधी–समर्थक भी सहमत नहीं हो सकेंगे। दूसरी तरफ अनेक स्थापनाओं से कम्यूनस्टि सहमत हो जाएंगे। जैसे मार्क्स ने कहा था कि मैं मार्क्सवादी नहीं हूं वैसे ही गांधीजी भी अपने को गांधीवादी नहीं कहते थे। मैं यहां गांधीवाद की चर्चा या व्याख्या नहीं

# वर्तमान सदी में भारतीय संस्कृति
# एकता में अनेकता के स्वर की प्रासंगिकता

**डॉ. शुभ्रा मिश्रा**
सहायक प्राध्यापक (राजनीति शास्त्र)
शास. मदनलाल शुक्ला महाविद्यालय, सीपत, जिला–बिलासपुर (छत्तीसगढ़)

**डॉ. मंजुला पाण्डेय**
सहायक प्राध्यापक (हिन्दी)
शास. मुना प्रसाद वर्मा स्नातकोत्तर कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय, बिलासपुर (छत्तीसगढ़)

**सस्मिता बरगाह**
सहायक प्राध्यापक (राजनीति शास्त्र)
शास.मदनलाल शुक्ला महाविद्यालय, सीपत, जिला–बिलासपुर (छत्तीसगढ़)

भारत मानव जातियों का एक ऐसा विशाल संग्रहालय है जिसमें हम संस्कृति के निम्नतर चरण से उच्चतर चरणों तक पहुंचते हुए मनुष्य का अध्ययन कर सकते हैं। इसके नमूने जीवाश्म या शुष्क अस्थियां नहीं हैं बल्कि जीते जागते मानव समुदाय हैं।[1]

भारत अपार नृजातिय विभिन्नताओं वाला देश है। ये विभिन्नताएं पृथक नहीं हैं अपितु साझेदारी और निजता के विविध रूपों में प्रकट होते हैं। इसे इस तरह समझा जा सकता है, कि भारत में 40635 मानव समुदायों की पहचान की गई, जिसके नाक नक्शे, भाषा, वेशभूषा, उपासना की पद्धति, पेशे, खानपान, आदतें और नाते रिश्ते के रूप में अलग–अलग हैं। इन्हीं विभिन्नताओं के कारण भारतीय समाज के आपसी तनाव और बाहरी दबाव तथा हितों के टकराव सदा चलते रहते हैं।[2]

संस्कृति की तरह व्यापक रूप से, व्याख्या आदिम समाज के संदर्भ में भी अधिक उपयुक्त है जहां उपयोगिता और सुन्दरता एक दूसरे से अभिन्न और एक दूसरे के पूरक हैं और जहां मानव समाज का आंतरिक विभेदीकरण और वर्गीकरण तथा मानव के कियाकलापों का अभिनिष्टिकरण तीव्र हुआ है।[3]

इसके विपरित 'आदिम समाज' की तुलना में 'विकसित समाज' में उपयोगिता और सुन्दरता (यूटीलीटी एंड ब्यूटी), श्रम (लेबर) तथा अवकाश (लेजर), श्रमिक और सम्पत्तिशाली समाज का विभाजन तथा समाज के आर्थिक आधार और गैरआर्थिक यानी सांस्कृतिक अधोसंरचना (सुपर स्ट्रक्चर) में विभेदीकरण तीव्रतर होता जाता है। फलस्वरूप विकास कम में संस्कृति की परिभाषा व्यापक से सीमित होती जाती है। आर्थिक क्षेत्र और सांस्कृतिक क्षेत्र का बढ़ता हुआ विभेदीकरण और तीव्रतर होता हुआ अंतर्विरोध विकास कम और परिवर्तन प्रक्रिया की ही देन है। वर्ग विहिन समाज की तुलना में वर्ग विभाजित समाज (और विशेषकर तीव्र वर्ग संघर्ष से ग्रस्त औद्योगिक समाज) में भौतिक उत्पादन के साधनों (मिन्स और मैटेरियल प्रोडक्सन) और मानसिक और आध्यात्मिक साधनों (मिन्स ऑफ मेंटल एंड स्पिरिचुअल प्रोडक्सन) का विभेद और अंतर विरोध तीव्रतर होता जाता है। आदिम समाज में इन दोनों प्रकार के उत्पादन साधनों और उत्पादन प्रकियाओं में पूरकता पाई जाती है। जिसे वर्ग–विभाजन मिटा देता है। साथ ही बाजारू अर्थव्यवस्था (मार्केट इकानॉमी) में प्राकृतिक अर्थव्यवस्था (नैचुरल इकानॉमी) की तुलना में सांस्कृतिक और सांस्कृतिकर्मी भी बाजारू माल की तरह खरीद फरोख्त की वस्तु बनते चले जाते हैं। जो इस बात का प्रतीक है कि मूल रूप में सांस्कृतिक व्यवस्था आर्थिक व्यवस्था के ही अधीनस्थ है।

श्री शम्भाजी छत्रपति महाविद्यालय कोल्हापुर में आयोजित अंतर्राष्ट्रीय सेमिनार का विषय CONTEMPORARY ISSUES AND CHALLENGES IN SOCIAL SCIENCES AND LANGUAGES ना केवल वर्तमान भारतीय समाज के मुद्दे एवं चुनौतियां हैं अपितु अनादि काल से भारतीय सभ्यता और संस्कृति के विकास के लिए ये मुद्दे और चुनौतियां स्थिर रहे हैं, और आखेट युग से लेकर वर्तमान के आते तक अपने अस्तित्व को बचाये रखने में सक्षम रही है। क्योंकि भारतीय संस्कृति का मूल स्वर ही अनेकता में एकता और वसुधैव कुटुम्बकम का उद्घोष रहा है। इन्हीं दो बिन्दुओं के आधार पर भारतीय समाज अपने आने वाली कठिनाइयों और चुनौतियों से विजय प्राप्त करती है। वर्तमान अवस्था पुनः इन्हीं संघर्ष का है और मुझे यह कहने में जरा भी संकोच नहीं है कि इन चुनौतियों का हल हमारे साहित्य, धर्म, ज्ञान–विज्ञान में आजमाए गए अचुक अस्त्रों से निपटा जा सकता है।

मैं कुछ उदाहरण अपने शोध के माध्यम से रखना चाहूंगी। इस संदर्भ में पं. जवाहरलाल नेहरू जी को उद्घृत करना चाहूंगी : पं. नेहरू लिखते हैं 'हिन्दुस्तान के नदी और पहाड़, जंगल और खेत, जो हमें अन्न देते है, ये सभी हमें अजीज हैं लेकिन आखिरकार जिनकी गिनती है वे हैं हिन्दुसतान के लोग, उनके और मेरे जैसे लोग, जो इस देश में फैले हुए है। भारत माता दरअसल इन्हीं करोडो लोग हैं, और ''भारत माता की जय'' से मतलब हुआ इन लोगों की जय। मैं उनसे कहता हूं कि तुम भारत

# गांधीवादी विचारधारा – ग्रामीण विकास के संदर्भ में

श्रीमती चैताली सलूजा
सहायक प्राध्यापक (हिन्दी)
शासकीय जमुना प्रसाद वर्मा स्नातकोत्तर कला/वाणिज्य महाविद्यालय,
बिलासपुर (छ.ग.)

ग्रामीण विकास एक बहुआयामी अवधारणा है जिसका विश्लेषण दो दृष्टिकोण के आधार पर किया गया है– संकुचित एवं व्यापक दृष्टिकोण। संकुचित दृष्टि से ग्रामीण विकास का अभिप्राय है विविध कार्यक्रमों जैसे – कृषि, पशुपालन, ग्रामीण हस्तकला एवं उद्योग आदि के द्वारा ग्रामीण क्षेत्रों का विकास करना। व्यापक दृष्टिकोण से ग्रामीण विकास का अर्थ है ग्रामीणजनों के जीवन में गुणात्मक उन्नति हेतु सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक, प्रौद्योगिक एवं संरचनात्मक परिवर्तन करना। विश्व बैंक (1975) के अनुसार [1]"ग्रामीण विकास एक विशिष्ट समूह– ग्रामीण निर्धनों के आर्थिक एवं सामाजिक जीवन को उन्नत करने की एक रणनीति है।"[1]

महात्मा गांधी के अनुसार [2]"ग्रामीण विकास से तात्पर्य ग्रामीण क्षेत्रों में निर्धन एवं असहाय लोगों को आर्थिक, सामाजिक एवं शैक्षिक स्तर से ऊपर उठाकर ग्राम को एक स्वावलंबी गणतंत्र बनाना है।"[2]

महात्मा गांधी जिस समय अंग्रेजों से आजादी की लड़ाई लड़ रहे थे, तभी उन्होने स्वतंत्र भारत की एक कल्पना की थी, जिसे उन्होंने राम राज्य का नाम दिया था। वह राम–राज्य में ग्राम–विकास पर सबसे अधिक बल दिये। उनके अनुसार भारत की प्रगति गाँव की प्रगति पर निर्भर करती है। हरिजन में उन्होने 4 अप्रैल, 1935 के अंक में लिखा था–

"मेरा विश्वास है और मैने इस बात को असंख्य बार दुहराया है कि भारत अपने चन्द शहरों में नहीं बल्कि सात लाख गाँवों में बसा हुआ है। लेकिन हम भारतवासियों का ख्याल है कि भारत शहरों में ही है और गाँवों का निर्माण शहरों की जरूरतें पूरी करने के लिए ही हुआ है।"[3]

गांधी जी के ग्रामीण विकास संबंधी विचारधारा को हम निम्न शीर्षकों के अंतर्गत समझ सकते हैं–

(1) ग्राम राज्यः– ग्रामवासियों की सामाजिक तथा आर्थिक दशा को सुधारने के लिए गांधी जी ने ग्रामराज्य बनाने की बात कही थी क्योंकि ग्रामराज्य की स्थापना से ही ग्रामों का चहुँमुखी विकास सम्भव हो पाएगा। उनके अनुसार ग्रामराज्य का अर्थ ऐसी समाज रचना है जो छोटी–छोटी शासकीय इकाइयों पर आधारित हो, जो अपना शासन स्वयं चलाए। उनका विचार था कि ग्रामराज्य केवल ग्रामों तक ही सीमित नही है, वह एक नई समाज रचना है जो वर्तमान गाँव, शहर और देश का सारा नक्शा बदल देता है। इसके आने पर ही गाँव का शोषण समाप्त हो सकेगा और तभी सच्चा प्रजातंत्र स्थापित हो सकेगा।

गांधी जी ने अपने जीवन में सारा प्रयोग 'ग्राम स्वराज' के लिए किया है। उन्होने शहरों से दूर आश्रमों की स्थापना करके यह प्रमाणित किया कि यदि भारत को स्वतंत्र रहकर जीवित रहना है तो इसका एक उपाय गाँव की संरचना है। गांधी जी का ग्राम स्वराज "व्यक्ति केंन्द्रित है। इसमें विकेन्द्रीकरण व सरल ग्राम अर्थ व्यवस्था है, जिसमें प्रत्येक के लिए रोजगार की व्यवस्था है, भोजन, वस्त्र और दैनिक जीवन की आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु आत्मनिर्भरता प्राप्त करने हेतु सभी

RNI NO.:CHHHIN2009/28197 ISSN:0976-9552

# सुंदर–सुभेष प्रकाशन से प्रकाशित पुस्तकें

1. अनहद गूँज (काव्य संग्रह) –डॉ. अरविंद शर्मा
2. मंथन (काव्य संग्रह) –डॉ. अरविंद शर्मा
3. चिंतन–प्रवाह (शोध पत्र संग्रह) –डॉ. डी. एस. ठाकुर
4. भारतीय संस्कृति एवं सनातन धर्म–ध्वज वाहक पं. विद्याकांत त्रिपाठी –कन्हैया लाल शर्मा, पवन कुमार अग्रवाल, माधवेन्द्र त्रिपाठी
5. प्रेमचंद के सर्वश्रेष्ठ उपन्यासों में भाषा–सौन्दर्य –डॉ. डी.एस. ठाकुर
6. तुलसी मंजरी (छत्तीसगढ़ी गीत संग्रह) –डॉ. अरविंद शर्मा
7. प्रांजल (काव्य संग्रह) –डॉ. अरविंद शर्मा
8. रहा किनारे बैठ (व्यंग्य काव्य संग्रह) –डॉ. अरविंद शर्मा
9. उषा के फूल (काव्य संग्रह) –अशोक मिश्र
10. ठूँठ कैं ठाट (निबंध संग्रह ) –अशोक मिश्र
11. सनेहिया के पाती (भोजपुरी गीत संग्रह) –अशोक मिश्र
12. कथा कल्पद्रुम (कहानी संग्रह) –डॉ. डी. एस. ठाकुर
13. पर्णशाला (काव्य संग्रह) – कौशलेन्द्र कुमार चतुर्वेदी
14. चिंता और चिंतन (निबंधसंग्रह) – डॉ. लक्ष्मी नारायण दुबे –अशोक कुमार मिश्र

स्वामी,प्रकाशक,मुद्रक अशोक कुमार मिश्र द्वारा मधु प्रिंटर्स, समता कॉलोनी रायपुर (छ.ग.) से मुद्रित व 'सुंदर–सुभेष' भवन, खमतराई बिलासपुर (छ.ग.) 495006 से प्रकाशित ।

E-mail: sundersubhesh@yahoo.in, Web : www.ssrj.in Mo : 09630525321

RNI NO.:CHHHIN2009/28197

पर्यावरण संरक्षण, ग्रामीण विकास एवं समाज कल्याण को समर्पित

# सुंदर-सुभेष

शोध पत्रिका

ISSN:0976-9552 An International referred research journal

वर्ष–10, अंक 1+2+3, जन.+फर.+मार्च –2018

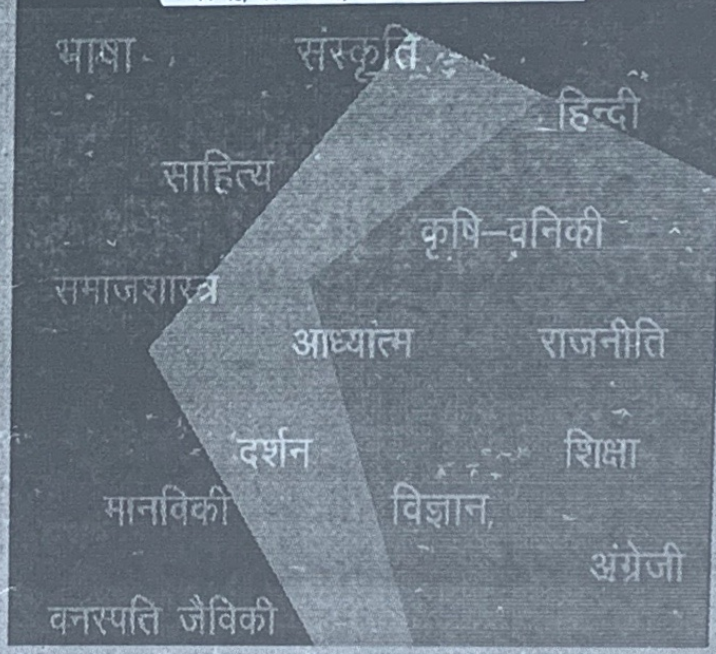

# Effect of the pebrine diseases in the tasar silkworm with special references to Bilaspur area of Chhatisgarh

Dr. Ranju Gupta, Asst. Professor of Zoology
Govt. J.P. Verma P.G. Arts & Commerce College,
Bilaspur (C.G.)
Dr. L.P.Miri, Asst. Professor of Zoology
Govt. J.P. Verma P.G. Arts & Commerce College,
Bilaspur (C.G.)

ntroduction

Tasar Silk is economically very important crop for India and the fashion industry, now a days it gives a huge earning to thousand of people. Tasar Silk worm culture is not only rearing of silkworm but is technically and scientifically cultivation of silk worm, a complete branches of science known as "Sericulture", nearly 35-40% of the tasar silk crop is lost from disease caused, which means economic loss of the country.

Many kind of silkworm disease are generally divided into two broad categories:

1. Infections disease : Infections disease are those caused by viruses, bacteria, fungi, protozoa and similar pathogenic micro organism these disease can be transmitted from infected larvae of healthy ones.
2. Non Infections disease : Non Infections disease are due to damage from arthropods, agricultural chemical, mechanicals, injuries and that cannot be spread from silk larvae to normal ones are termed non Infections disease.

Review of literature:

The history of research on Pebrine disease progressed with the advancement of microbiology in 19th Century. The name "Pebrine" was coined by De quatrefages (1860) beause of the appearance of pepper like spots in the diseased larvae. The desease causing micro-organism was first observed in haemolymph of silkworm and was given the name "Hematzoid" (Guerinmen-aville, 1849). Pebrine disease of silkworm is one of the most melodies which determine success or failure of sericulture industry in any country. The evidence showed

# भारतीय अर्थव्यवस्था पर कोविड-19 का प्रभाव

–डॉ. किरण एक्का

(शा.जे.पी. वर्मा स्नातकोत्तर कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय बिलासपुर)

कोरोना वायरस ने पूरी दुनिया की अर्थव्यवस्था को प्रभावित किया है, जिसकी वजह से भारतीय अर्थव्यवस्था को भी गहरी चोट पहुंची है। पहले महामारी पर काबू पाने के लिए लॉकडाउन को सख्ती से लागू किया गया फिर अर्थव्यवस्था के पहिए को घुमाने के लिए उसे शिथिल करना शुरू किया गया। लॉकडाउन में तमाम छूट के बाद भी पहले जैसी स्थिति बनती नहीं दिख रही है। विश्व बैंक के अनुसार कोरोना वायरस महामारी की वजह से देश की आर्थिक वृद्धि दर में भारी गिरावट आने की संभावना है। इससे न सिर्फ लोगों की जान जा रही है बल्कि अर्थव्यवस्था पर भी बुरा असर पड़ रहा है।

कोरोना महामारी के भारत में पहुंचने से पहले ही देश की अर्थव्यवस्था चिंताजनक थी। यदि पिछले साल की बात की जाए, तो पता चलता है कि ऑटोमोबाइल सेक्टर, रियल स्टेट, लघु उद्योग समेत असंगठित क्षेत्र में मंदी छाई हुई थी, जिससे बैंक NPA जैसी समस्याओं से अब तक जूझ रहे थे, सरकार भी निवेश के जरिए विभिन्न प्रकार की राहत और आर्थिक मदद देकर अर्थव्यवस्था को रफ्तार देने की कोशिश में लगी थी। दूसरे शब्दों में कहा जाए तो पहले से ही विभिन्न प्रकार की क्षेत्रीय, राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय मुश्किलें झेल रही भारतीय अर्थव्यवस्था को कोरोना वायरस ने अनिश्चितता की स्थिति में लाकर खड़ा कर दिया। आईएमएफ, वर्ल्ड बैंक और एशियन डेवलपमेंट बैंक जैसी संस्थाओं ने भारत की आर्थिक वृद्धि दर के अनुमान में बड़ी कटौती की है। विश्व बैंक ने अनुमान लगाया है कि वित्तीय वर्ष 2020–21 में अर्थव्यवस्था की वृद्धि दर में भारी गिरावट आएगी जो मात्र 2.8 %होने की संभावना है।

आइए जानते हैं लडखडाती अर्थव्यवस्था को कोरोना वायरस किस तरह प्रभावित कर रहा है। कोविड–19 के जारी वैश्विक संकट के बीच भारतीय परिदृश्य में आर्थिक दृष्टिकोण से देखा जाए तो सबसे अधिक चर्चा दो पहलुओं पर हो रही है–

1. भारतीय अर्थव्यवस्था की सबसे कमजोर आबादी, यानी किसान, असंगठित क्षेत्र में काम करने वाले मजदूर, दैनिक मजदूरी के लिए शहरों में पलायन करने वाले मजदूर और शहरों में सड़क के किनारे छोटा–मोटा व्यापार करके आजीविका चलाने वाले लोग।
2. भारतीय अर्थव्यवस्था में उत्पादन करने वाले अर्थात् वह क्षेत्र जो पूंजीगत और गैर–पूंजीगत वस्तुओं का उत्पादन करता है। सामान्य भाषा में कहें तो विनिर्माण क्षेत्र।

कोरोना वायरस के संक्रमण को फैलने से रोकने के लिए सरकार ने लॉकडाउन का सहारा लिया, साथ ही सोशल डिस्टेंसिंग और अन्य नियमों का पालन करने को कहा। ऐसे में यह संक्रमण को रोकने की दिशा में एक अच्छा कदम है पर दूसरी ओर यह भारतीय अर्थव्यवस्था के लिए नकारात्मक साबित हुआ। लॉकडाउन की वजह से आम जनता का जनजीवन तो प्रभावित हुआ ही, ऐसे लोग जो दूसरे प्रदेशों

NAAC

[illegible]

# सुंदर-सुबोध

शोध पत्रिका

ISSN:0976-9552

वर्ष 10, अंक 1+2+3, [illegible] 2018

हिन्दी

साहित्य

समाजशास्त्र

आध्यात्म

राजनीति

दर्शन

शिक्षा

विज्ञान

अंग्रेजी

# लोकतंत्र : एक विश्लेषण

–डॉ. (श्रीमती) प्रमिला गिरी
सहायक प्राध्यापक, राजनीति विज्ञान
शास. जे. पी. वर्मा स्नात. कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय बिलासपुर (छ.ग.)

मानव की विकास यात्रा जंगल, वन–प्रांतर एवं गुफा–गह्वर से निकलकर जब इस मुकाम पर पहुँची कि वह अपनी घुम्मकड़ स्वभाव की जगह स्थिर समुदाय में निवास करने की वृत्ति को अपनाना ही उचित समझा। अब उसे लोगों के साथ रहने की नयी व्यवस्था में कुछ नियम कायदे की आवश्यकता महसूस होने लगी। इस विकास–क्रम में आरम्भ से ही अनेक शासन प्रणालियाँ अस्तित्व में आई किन्तु व्यावहारिक रूप में जो अधिकांश को स्वीकार्य हुई वह है–लोकतंत्र।

लोकतंत्र की अवधारणा के मूल में व्यक्ति की स्वतंत्रता का सम्मान निहित है। व्यक्ति से ही समाज और समाज से ही राष्ट्र का निर्माण होता है। लोकतंत्र दो शब्दों 'लोक' एवं 'तंत्र' से मिलकर बना है। लोक का अर्थ है– लोग अर्थात् आम जन एवं 'तंत्र' का अर्थ है– 'व्यवस्था' या 'प्रणाली'।

इस व्यवस्था में पूरा समाज प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से पूरे समाज पर शासन करती है। जहाँ और जिस भी देश में यह शासन–व्यवस्था लागू की जाती है, वहाँ की सम्पूर्ण जनता अथवा वह समाज अपने ही बीच से अपना एक प्रतिनिधि चुनता है जिसके द्वारा शासन चलाया जाता है। प्रतिनिधि अपने समाज के हित का सदैव ख्याल रखता है। इस शासन–व्यवस्था के संबंध में अपना विचार प्रस्तुत करते हुए लार्ड ब्राइस ने लिखा है– "सही अर्थ में लोकतंत्र ईसाई धर्म की देन है, जिसका सिद्धांत प्रारम्भ से आज तक ईश्वर के सम्मुख सभी मनुष्यों की समानता पर बल देता रहा है।"

लोकतंत्र एक दर्शन है। स्वतंत्रता, समानता, न्याय भाईचारा का सिद्धांत है। वास्तव में लोकतंत्र सैद्धांतिक अध्ययन का विषय नहीं है। वह एक जीवन पद्धति है जिसे स्वतंत्रता के माध्यम से जीवन के अनुकूल बनाया जाता है और नागरिक विकास के लिए अनुकूल परिस्थितियाँ प्राप्त करता है।

प्रारंभ से ही हमारे देश भारतवर्ष में विचार और जीवन दर्शन के रूप में "वसुधैव कुटुम्बकम्" पंचशील जैसे आदर्श राजनीतिक, सामाजिक पृष्ठभूमि के आधार रहे हैं। वस्तुतः वैदिक काल से ही यह शासन प्रणाली हमारे देश में प्रभावी ढंग से कार्य कर रही थी। उस युग में भी लोकतांत्रिक स्वशासी संस्थाओं का उल्लेख मिलता है। ऋग्वेद में 'गणराज्य' शब्द आया है। 'गण' का अर्थ है– गणना अथवा संख्या एवं गणराज्य का अर्थ– 'लोकतंत्र' है। ऋग्वेद और अथर्ववेद में 'सभा' एवं 'समिति' नाम की संस्थाओं का जिक्र मिलता है। ऋग्वेद में तो यह स्पष्ट व्यवस्था दी गई थी कि आम जनता के बीच से विभिन्न वर्गों से विशिष्ट व्यक्तियों का चयन करके शक्तिशाली राजसभा का गठन हो। इस सभा में युद्ध–प्रवीण, बुद्धिमान अनुभवी एवं विद्वान व्यक्ति हों ताकि वे सभी राष्ट्रहित में कार्य करें। इन सभा एवं समितियों में सदस्य के रूप में पुरुष के साथ महिला भी सम्मिलित हो सकती थीं। उनसे यही

# भारतीय साहित्य में कृष्ण

डॉ. प्रणव शास्त्री

देशभारती प्रकाशन
दिल्ली-110093

**ISBN : 978-93-81488-57-7**

प्रकाशक : देशभारती प्रकाशन
सी-585, गली नं. 7, अशोक नगर,
निकट रेलवे फाटक, शाहदरा,
दिल्ली-110093
दूरभाष : 9870425842

© : लेखक

प्रथम संस्करण : 2019

मूल्य : ₹ 750/-

आवरण : अमित कुमार

शब्द-संयोजन : मुस्कान कम्प्यूटर्स, दिल्ली-110094

मुद्रक : विशाल कौशिक प्रिंटर्स, दिल्ली-110093

**Bhartiya Sahitya Mein Krishna**
*By Dr. Pranav Shastri*

# शब्द-भोग

ब्रज में सर्वत्र कृष्णानुरागी राधे-राधे कहकर कृष्णप्रिया को रिझाने का प्रयास करते हैं। हम भी यह भाव रखें, तो कैसा रहे?

राधे मेरी स्वामिनी, मैं राधे तेरौ दास।
जन्म-जन्म मोहि दीजियो, श्री वृन्दावन वास।।

सच कहूँ, ब्रजवास और ब्रजरज बिना राधारानी की कृपा के संभव ही नहीं है। लाड़िली जी अनुकंपा करती हैं तब ही यह जीव वृन्दावन आ पाता है। कृष्ण की कृपा और राधारानी का दुलार इस लोक में बड़ा दुर्लभ है। इस अन्तरराष्ट्रीय शोध-संगोष्ठी की कल्पना, मूर्तरूप तथा सुखद परिणति राधाकृष्ण के प्रेम का प्रसाद ही तो है। उन्होंने ही प्रेरणा प्रदान की। उन्होंने ही योजना बनायी। वे ही इसे पूर्ण कर रहे हैं। **त्वदीयं वस्तु गोविन्द, तुभ्यमेव समर्पयेत्**। हे नाथ! हम सब इस ग्रन्थ के रूप में आपको अपना 'शब्द-भोग' अर्पित कर रहे हैं। स्वीकार कर उपकृत कीजिए। जब संगोष्ठी की रचना बनी, तब सहचर भी मिलते चले गए। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, उ.प्र. भाषा संस्थान, संस्कार भारती, अखिल भारतीय साहित्य परिषद, विश्व हिन्दी मंच, आचार्य पं. नरोत्तमलाल सेवा संस्थान, अन्तरराष्ट्रीय साहित्य कला मंच, इस्कॉन, रस भारती संस्थान, वृन्दावन शोध संस्थान ने अकादमिक, आर्थिक संबल देकर इस योजना को सफल बनाया। सभी शोधपत्र लेखकों ने समय पर उत्कृष्ट प्रपत्र भेजकर इस भोग को तैयार करने में सहायता की, उनके प्रति आभार। इस ग्रन्थ में जो प्रीतिकर लगा, वह सहृदय मित्रों का है। कुछ न्यूनताएँ भी रह गयी हैं, वह मेरी अल्पज्ञता है। इसमें सारा प्रयास कृष्ण प्रेमियों का है; मैंने तो केवल तुलसीदल डालकर कृष्णार्पण किया है।

राधे-राधे।

10 अक्टूबर, 2019
वृन्दावन

**डॉ. प्रणव शास्त्री**
संपादक

41. साहित्य में कृष्ण 193
**डॉ. गौरी के.**
42. पं. घासीराम व्यास का कृष्ण काव्य 196
**डॉ. अर्चना शर्मा**
43. सूरदास के बालकृष्ण 199
**डॉ. स्नेहलता शर्मा**
44. भारतीय साहित्य में कृष्ण 202
**राधाकृष्ण पाठक**
45. नरसिंह मेहता के कृष्ण भक्ति गीत 205
**भरत पाटलिया**
46. हरियाणवी साहित्य में कृष्ण 209
**डॉ. बजरंग लाल**
47. गीता में श्रीकृष्ण 211
**डॉ. वसुन्धरा उपाध्याय**
48. कृष्णं वन्दे जगद्गुरुम् 214
**डॉ. शिवकुमार शर्मा**
49. केरल में कृष्ण भक्ति 217
**डॉ. जगदीश प्रसाद शर्मा**
50. आधुनिक कृष्णकाव्य में कृष्ण का स्वरूप एवं विकास 219
**डॉ. शक्ति प्रसाद द्विवेदी**
51. बाँकेबिहारी कृष्ण के विभिन्न स्वरूप 224
**डॉ. बलजीत कुमार श्रीवास्तव**
52. सूर का बाल-वर्णन 230
**डॉ. प्रीति यादव**
53. सूर का बाल वर्णन 233
**डॉ. रेखा शर्मा**
54. भारतीय साहित्य में कृष्ण 236
**डॉ. योग्यता भार्गव**
55. कन्नड़ साहित्य में कृष्ण 243
**डॉ. चिलुका पुष्पलता**
56. ब्रज साहित्य में श्रीकृष्ण रासलीला 248
**डॉ. दिग्विजय कुमार शर्मा**
57. भारतीय समाज एवं साहित्य में श्रीकृष्ण 253
**डॉ. विजेंद्र प्रताप सिंह**
58. सूर : बाल-लीला 256
**डॉ. शारदा शर्मा**
59. सूरसागर में राधा का चरित्र 259
**डॉ. नितिन सेठी**
60. सूरदास के काव्य में कृष्ण का बाल रूप 263
**डॉ. मनुप्रताप**
61. प्रेम निमज्जित ब्रजभाषा काव्य 266
**डॉ. प्रणव शास्त्री**
62. किलकत कान्ह घुटुरुवनि आवत 270
**डॉ. प्रणीता गोस्वामी**
63. वैदिक मूल्यों के संवाहक श्रीकृष्ण का विराट व्यक्तित्व 272
**डॉ. ( श्रीमती ) जयश्री शुक्ल**
64. वृन्दावन की व्यास परम्परा 275
**डॉ. प्रत्यूषा दुबे**
**डॉ. विकास कौशिक**
**डॉ. सन्ध्या शर्मा**
**डॉ. पल्लवी कौशिक**
65. सहनशील धरती माता 277
**काव्या शर्मा**
66. बदलते समाज में महिलाओं की स्थिति 278
**डॉ. वन्दना वशिष्ठ**
67. सांस्कृतिक सर्वस्व एवं कृष्ण भक्ति 279
**प्रो. सूर्यप्रसाद दीक्षित**
68. कन्नड़ साहित्य में कृष्ण : हिंदी साहित्य के साथ एक तुलनात्मक अवलोकन 281
**प्रो. लता चौहान**
69. वैदिक मूल्यों के प्रतिष्ठापक 'नन्दनन्दन' 284
**डॉ. राजनारायण शुक्ल**
70. साहित्य और पर्यावरण 287
**डॉ. बी.आर. भद्री**

# अनुवाद की समस्याएँ

डॉ. राम गोपाल सिंह जादौन

साहित्य संस्थान
गाजियाबाद-201102

ISBN : 978-81-89495-72-5

© : डॉ. राम गोपाल सिंह जादौन

प्रकाशक : साहित्य संस्थान
ई-10/660, उत्तरांचल कालोनी,
(नियर संगम सिनेमा)
लोनी बार्डर, गाजियाबाद-201102
मोबाइल : 9968047183
Email : fatehchand058@gmail.com

मूल्य : 500 रुपये

आवरण : एम. डी. सलीम

प्रथम संस्करण : 2019

शब्द-संयोजन : मुस्कान कम्प्यूटर्स, दिल्ली

मुद्रक : पूजा ऑफसेट
दिल्ली-110093

**Anuvad Ki Samasyayen**
*By Dr. Ram Gopal Singh Jadaun*

अनुवाद के क्षेत्र में कार्यरत
नामी / अनामी विद्वानों /
अनुवादकों / मित्रों के प्रति
सादर समर्पित।

**- डॉ. राम गोपाल सिंह जादौन**

करने, अनुवाद विधा पर ग्रंथ लिखने के परिणामस्वरूप इस विषय पर गहन पैठ होने के उपरांत मुझे बार-बार महसूस होता है कि स्वातंत्र्योत्तर हिंदी अनुवाद के विविध परिप्रेक्ष्यों पर शोधकार्य होने चाहिए ताकि स्वतंत्र भारत में प्रयोजनमूलक क्षेत्रों में विकसित एवं रोजी-रोटी के साधन इस विधा के प्रच्छन्न धरातलों को उजागर किया जा सके तथा आवश्यकतानुरूप अनुवादक प्रशिक्षित किए जा सकें; साथ ही, इस विषय में लोगों का रुझान भी बना रहे।

- डॉ. राम गोपाल सिंह
प्रोफ़ेसर एवं अध्यक्ष
हिंदी विभाग तथा राजभाषा अधिकारी
गुजरात दिद्यापीठ
अहमदाबाद-380014



# अनुक्रम

संपादकीय : अनुवाद के विविध परिप्रेक्ष्यों पर शोधकार्यों की महती आवश्यकता 7

1. अनुवाद का पारिभाषिक परिप्रेक्ष्य — डॉ. राम गोपाल सिंह 17
2. अनुवाद मूल्यांकन के सोपान : पद्धतियाँ एवं सिद्धांत — डॉ. राम गोपाल सिंह 31
3. पारिभाषिक शब्दावली का स्वरूप और संप्रदाय — डॉ. राम गोपाल सिंह 43
4. वैज्ञानिक एवं प्रौद्योगिकी साहित्य के अनुवाद की समस्याएँ — डॉ. राम गोपाल सिंह 60
5. हिंदी अनुवाद के वातायन से भारतीय साहित्य का तुलनात्मक अध्ययन — डॉ. विनय कुमार पाठक 70
6. अनुवाद की समस्याएँ — डॉ. जयश्री शुक्ल 76
7. रोजगारमूलक अनुवाद के क्षेत्र — प्रो.सुरेश माहेश्वरी 83
8. साहित्यिक अनुवादक की अपेक्षाएँ — डॉ. शैलजा माहेश्वरी 91
9. हिन्दी की प्रयोजनीयता में अनुवाद की भूमिका — डॉ. परमजीत पांडेय 96
10. लोकोक्तियों एवं मुहावरों का अनुवाद — डॉ. मंजुला पांडेय 100
11. जनसंचार माध्यम और अनुवाद — कु. शैली ओझा 105
12. काव्यानुवाद की परंपरागत प्रक्रिया — डॉ. कल्याणी जैन 109
13. राजभाषा हिन्दी, अनुवाद और आधुनिकीकरण — डॉ. रेखा दुबे 117
14. संक्षेपण और अनुवाद — डॉ. रेखा शर्मा 121
15. अनुवाद की प्रासंगिकता : समस्याएँ और समाधान — डॉ. राकेश परास्ते 126
16. अनुवाद की प्रासंगिकता — डॉ. इसाबेला लकड़ा 131
17. मशीनी अनुवाद : एक अनुशीलन — डॉ. जितेन्द्र कुमार सिंह 135
18. जनसंचार माध्यम और अनुवाद श्री विमलेंद्र पाल सिंह भदौरिया 148

ISSN-2456-3625

# प्रयोग एवं व्यवहार से दूर होते, कुंड़ुख बोली के शब्द

– डॉ. (श्रीमती) फेदोरा बरवा

सहायक प्राध्यापक, हिन्दी

शासकीय जे.पी. वर्मा स्नातकोत्तर कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय, बिलासपुर (छ.ग.)

आज उराँव समुदाय के सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन में आधुनिकता की गहरी छाप दिखाई दे रही है। बदलते समय के साथ उराँव समाज में भी अन्य समाजों की तरह बहुत बदलाव आया है। आज उराँव समाज की सामाजिक पहचान में एक अत्यंत महत्वपूर्ण और आधारभूत परिवर्तन आया है। उराँव समाज के लिये परिवर्तन का अर्थ विकास रहा है। इस समुदाय ने परिवर्तन के प्रति उदार दृष्टिकोण अपनाया है और इस तरह अपने सतत् परिवर्तन व रूपांतरण में एक विलक्षण स्फूर्ति हासिल कर ली है। शिक्षा के बदौलत उराँव समाज ने अपनी आर्थिक स्थिति के सुधार में आज तक उत्तरोत्तर सफलता हासिल की है। नौकरी और काम की तलाश में कई उराँव आदिवासी नगरों और शहरों में बड़ी संख्या में दिल्ली, बम्बई, कलकत्ता जैसे महानगरों में गांवों से आकर बस गये हैं। सामाजिक सम्पर्क और जीवन के बढ़ते अवसर के फलस्वरूप उनके मापदण्ड का क्रमिक रूपांतर हो रहा है। उरांव जीवन पर आधुनिकता की पकड़ तेज होती जा रही है। चाहे वह समाजिक, आर्थिक या भाषा का हो। आज कुड़ुख बोली पर भी इसका असर देखने को मिलता है। कुंड़ुख बोली में आज हिन्दी, अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग बहुतायत से होने लगा है। जिसके कारण कुंड़ुख बोली के कुछ शब्द आज सिर्फ शब्दकोश के शब्द मात्र बनकर रह गये हैं। मूल में उस शब्द को क्या कहा जाता था शायद किसी को याद रहें। मैं अन्य भाषा के शब्दों के प्रयोग के खिलाफ नहीं हूँ, मैं बस इतना कहना चाहती हूँ कि हमारे पूर्वज जो शब्द धरोहर के रूप में हमें सौंपे हैं, उन शब्दों के अस्तित्व को बचाये रखना भी हमारा कर्तव्य है। अगर हम उन शब्दों का प्रयोग नहीं करेंगे तो हमारी आने वाली पीढ़ी उन शब्दों से परिचित कैसे होंगी ? अतः मैं इस लेख के माध्यम से उन शब्दों से परिचय कराना चाहती हूँ जो प्रायः प्रयोग से दूर हो चुके हैं या फिर कुछ ही लोगों के द्वारा प्रयोग में लाये जा रहे हैं –

**1. सड़ा** – इसका अर्थ है (शब्द) – इस शब्द का प्रयोग केवल शब्दाकोश मे ही रह गया है। कुंड़ुख बोली बोलते समय हम सड़ा के स्थान पर शब्द का ही प्रयोग करते हैं।

**2. भखा** – इसका अर्थ है 'भाषा', आजकल हम भखा के स्थान पर भाषा शब्द का प्रयोग करते हैं।

**3. 'अर्ज'आना** – इस शब्द का प्रयोग भी हम बहुत कम करते हैं। इसका अर्थ है– 'क्रिया, और दूसरा कमाने के अर्थ में भी लिया जाता हैं।

**4. फुरच'आना'** – इसका अर्थ है साफ उच्चारण करना या साफ बोलना। इस शब्द का प्रयोग भी लगभग कुछ लोगों के मुख से ही सुनने को मिलता हैं।

**5. आइल'आना'** – हंसी उड़ाना या ताना मारना। इस शब्द के स्थान पर हिन्दी के शब्द का ही हम ज्यादा प्रयोग करते हैं।

**6. आसपैंड़ा** – (प्रतीक्षा या इन्तजार) शब्द ज्ञान तो है पर लोग इसका प्रयोग बोलचाल में कम करते है।

**7. उमतहा** – पागल उन्मादी (बौरहा) इस शब्द के स्थान पर पगला या बौरहा शब्द का प्रयोग करते हैं।

**8. ऊंडरी** – (घर की मालकिन, गृहस्वामिनी) इस शब्द के स्थान पर घर मालकिन या उरूबनी शब्द का प्रयोग ज्यादा होता है।

**9. कुटु** – (कंजुस, किसटहा, चिमसहा) इस शब्द के स्थान पर इन तीनों शब्दों का प्रयोग ज्यादा किया जाता है।

**10. कोल्लम** – (दुःख, दुखद, उदास) कोल्लम के स्थान पर दुःख शब्द का प्रयोग किया जाता है। उदाहरण– एंगागे कोल्लम लग्गी– मुझे दुःख होता है।

**11. खिलपाइत ससेइत** – (विपत्ति, मुसीबत, दुख–तकलीफ) इस शब्द के स्थान पर इन्हीं तीन शब्दों का प्रयोग ज्यादा किया जाता है।

**12. खोबरारना** – (पश्चाताप करना) इस शब्द के स्थान पर पसतारना जो (पश्चाताप का बिगड़ा रूप है) प्रयोग किया जाता है।

# अनुवाद की समस्याएँ

डॉ. राम गोपाल सिंह जादौन

साहित्य संस्थान
गाजियाबाद-201102

ISBN : 978-81-89495-72-5

© : डॉ. राम गोपाल सिंह जादौन

प्रकाशक : साहित्य संस्थान
ई-10/660, उत्तरांचल कालोनी,
(नियर संगम सिनेमा)
लोनी बार्डर, गाजियाबाद-201102
मोबाइल : 9968047183
Email : fatehchand058@gmail.com

मूल्य : 500 रुपये

आवरण : एम. डी. सलीम

प्रथम संस्करण : 2019

शब्द-संयोजन : मुस्कान कम्प्यूटर्स, दिल्ली

मुद्रक : पूजा ऑफसेट
दिल्ली-110093

Anuvad Ki Samasyayen
By Dr. Ram Gopal Singh Jadaun

अनुवाद के क्षेत्र में कार्यरत
नामी / अनामी विद्वानों /
अनुवादकों / मित्रों के प्रति
सादर समर्पित।

- डॉ. राम गोपाल सिंह जादौन

करने, अनुवाद विधा पर ग्रंथ लिखने के परिणामस्वरूप इस विषय पर गहन पैठ होने के उपरांत मुझे बार-बार महसूस होता है कि स्वातंत्र्योत्तर हिंदी अनुवाद के विविध परिप्रेक्ष्यों पर शोधकार्य होने चाहिए ताकि स्वतंत्र भारत में प्रयोजनमूलक क्षेत्रों में विकसित एवं रोजी-रोटी के साधन इस विधा के प्रच्छन्न धरातलों को उजागर किया जा सके तथा आवश्यकतानुरूप अनुवादक प्रशिक्षित किए जा सकें; साथ ही, इस विषय में लोगों का रुझान भी बना रहे।

- डॉ. राम गोपाल सिंह
प्रोफ़ेसर एवं अध्यक्ष
हिंदी विभाग तथा राजभाषा अधिकारी
गुजरात विद्यापीठ
अहमदाबाद-380014



# अनुक्रम

संपादकीय : अनुवाद के विविध परिप्रेक्ष्यों पर शोधकार्यों की महती आवश्यकता 7

1. अनुवाद का पारिभाषिक परिप्रेक्ष्य — डॉ. राम गोपाल सिंह 17
2. अनुवाद मूल्यांकन के सोपान : पद्धतियाँ एवं सिद्धांत — डॉ. राम गोपाल सिंह 31
3. पारिभाषिक शब्दावली का स्वरूप और संप्रदाय — डॉ. राम गोपाल सिंह 43
4. वैज्ञानिक एवं प्रौद्योगिकी साहित्य के अनुवाद की समस्याएँ — डॉ. राम गोपाल सिंह 60
5. हिंदी अनुवाद के वातायन से भारतीय साहित्य का तुलनात्मक अध्ययन — डॉ. विनय कुमार पाठक 70
6. अनुवाद की समस्याएँ — डॉ. जयश्री शुक्ल 76
7. रोजगारमूलक अनुवाद के क्षेत्र — प्रो.सुरेश माहेश्वरी 83
8. साहित्यिक अनुवादक की अपेक्षाएँ — डॉ. शैलजा माहेश्वरी 91
9. हिन्दी की प्रयोजनीयता में अनुवाद की भूमिका — डॉ. परमजीत पांडेय 96
10. लोकोक्तियों एवं मुहावरों का अनुवाद — डॉ. मंजुला पांडेय 100
11. जनसंचार माध्यम और अनुवाद — कु. शैली ओझा 105
12. काव्यानुवाद की परंपरागत प्रक्रिया — डॉ. कल्याणी जैन 109
13. राजभाषा हिन्दी, अनुवाद और आधुनिकीकरण — डॉ. रेखा दुबे 117
14. संक्षेपण और अनुवाद — डॉ. रेखा शर्मा 121
15. अनुवाद की प्रासंगिकता : समस्याएँ और समाधान — डॉ. राकेश परास्ते 126
16. अनुवाद की प्रासंगिकता — डॉ. इसाबेला लकड़ा 131
17. मशीनी अनुवाद : एक अनुशीलन — डॉ. जितेन्द्र कुमार सिंह 135
18. जनसंचार माध्यम और अनुवाद — श्री विमलेंद्र पाल सिंह भदौरिया 148

# PROCEEDINGS OF THE
# 56th ANNUAL CONVENTION OF CHEMISTS 2019
# &
# International Conference on Recent Trends in Chemical Sciences

**November 14-16, 2019**

*Hosted by*

School of Studies in Chemistry
Pt. Ravishankar Shukla University
Raipur-492 010, Chhattisgarh
Website : www.prsu.ac.in

*Co-Hosted by*

Govt. Nagarjuna P.G. College of Science
Raipur-492 010
Chhattisgarh

*Co-sponsors*

Department of Science & Technology, New Delhi
Council of Scientific & Industrial Research, New Delhi
University Grants Commission, New Delhi
Institution of Chemists (India), Kolkata

*Organised by*

**INDIAN CHEMICAL SOCIETY**
92, Acharya Prafulla Chandra Road
Kolkata-700 009
Website : www.indianchemicalsociety.com
E-mail : indi3478@dataone.in

*Venue*

Pt. Ravishankar Shukla University
Raipur-492 010, Chhattisgarh

**ING(PP)–01: Molecular assembly for [Cu], [$Cu_2$] and [$Cu_4$] complexes: Uphill Conversions and direct synthesis of [$Cu_4$] complex** Mrinal Sarkar, *Derozio Memorial College, Rajarhat Road, Kolkata-700 136*
*E-mail : msarkar81@gmail.com*

Three different copper(II) complexes of varying nuclearity have been synthesized with $N_2O$ donor Schiff base ligand 4-methyl-2,6-bis-(phenyliminomethylene)-phenol and its one arm hydrolyzed descend 4-methyl-2-formyl-6-(phenylmethyl-iminomethylene)-phenol. The plastlcity of the copper coordination geometries is responsible for varying modes of ligand binding and structures. In MeOH the reaction of ligand with $Cu(ClO_4)_2{\cdot}6H_2O$ in absence of any added base and $Cu(NO_3)_2{\cdot}3H_2O$ in presence of $NEt_3$ or NaOH give $[Cu(fpp)_2]_\infty$ (**1**) as 1D chain. Whereas the same reaction in MeOH in the presence of $NEt_3$ or NaOH with $Cu(ClO_4)_2{\cdot}6H_2O$ yielded weakly coordinated bis-perchlorato capped [$Cu_2$] complex $[Cu_2(\mu\text{-bpp})_2(\mu\text{-}ClO_4)_2]$ (**2**). Use of $Cu(NO_3)_2{\cdot}3H_2O$ and *p*-$O_2NC_6H_4CO_2Na$ lead to direct synthesis of copper tetrahedron $[Cu_4(\mu\text{-bpp})_2(\mu_4\text{-}O)(\mu\text{-}O_2CH_4C_6NO_2\text{-}p)_4]$ (**3**) having a nucleating external $\mu_4$-$O^{2-}$ anion. Uphill conversions of **1** to **3** and **2** to **3** are readily achieved by reacting **1** and **2** with $PhNH_2$, $Cu(NO_3)_2{\cdot}3H_2O$, *p*-$O_2NC_6H_4CO_2Na$ and $Cu(ClO_4)_2{\cdot}6H_2O$, *p*-$O_2NC_6H_4CO_2Na$, respectively in MeOH.

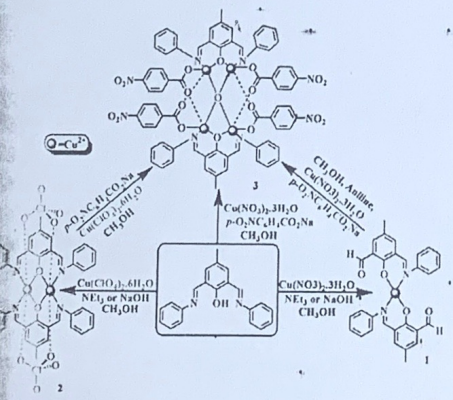


**References**

1. M. Sarkar, R. Cléarc, C. Mathonière, N. G. R. Hearns, V. Bertolasi and D. Ray, *Inorg. Chem.*, 2010, **49**, 6575.
2. M. Sarkar, R. Cléarc, C. Mathonière, N. G. R. Hearns, V. Bertolasi, D. Ray, D. *Inorg. Chem.*, 2011, **50**, 3922.

**ING(PP)–02: Non-isothermal kinetic computations of solid state thermal decomposition with thermal analysis data of copper(II) complex with some amino acids** Priyanka Tiwari* and H. Mohabey, *Department of Chemistry, Govt. J. R. Verma Arts and Commerce P.G. College, Bilaspur-495 001, Chhattisgarh*
*E-mail : priyankat0509@yahoo.com*

Mixed ligand complexes of copper(II) with amino acids have been synthesized and characterized by elemental analysis, infra-red spectra and thermogravimetric analysis, kinetic parameters such as apparent activation energy, frequency factor and entropy of decomposition complex have been determined employing methods of Sharp-Wentworth and Coats-Redfern using non-isothermal thermogravimetric curves. The values obtained for activation energy, entropy of activation and frequency factor as calculated from Sharp-Wentworth and Coats-Redfern method are in good agreement with each other.

**ING(PP)–03: Study of supramolecular interactions in newly synthesized bis-(tetrachlorocatecholate) chelated manganese(III) complex** Goutam Mahata, *Department of Chemistry, Gokhale Memorial Girls' College, 1/1, Harish Mukherjee Road, Kolkata-700 020*
*E-mail : goutammahata1977@gmail.com*

A mononuclear manganese(III) complex, $[DABH_2][Mn_2(Cl)_4Cat)_2(H_2O)_2]{\cdot}4DMF$ (**1**) (DAB = 1,4-diaminobutane, $Cl_4CatH_2$ = tetrachlorocatechol), was synthesized by taking manganese(II) chloride tetrahydrate and tetrachlorocatechol in 1:2 molar ratio in the presence of 1,4-diaminobutane in DMF-water mixture under aerobic condition. X-Ray crystallography analysis reveals that two tetrachlorocatecholate ligands are coordinated to manganese(III) centre in equatorial positions in the complex. The axial positions of the complex are occupied by two water molecules and satisfy its hexa coordination (Fig. 1). The crystal packing of **1** is stabilized by hydrogen bonding, halogen-halogen, C-H···π and π···π interactions. The oxygen atoms of coordinated tetrachlorocatecholate ligands and lattice DMF molecules acts as hydrogen bond acceptors whereas the axially coordinated water molecules and doubly protonated 1,4-

NAHC

# शोध विविधा

भाषा, साहित्य एवं मानविकी के पूर्व समीक्षित तथा संदर्भित गुणवत्तापूर्ण
शोधपत्रों का पुस्तक अध्याय के रूप में संकलन

संपादक
डॉ. राहुल शुक्ला
डॉ. हरिणी रानी आगर

संप्र
संकल्प प्रकाशन
कानपुर (उ.प्र.)

ISBN : 978-81-942779-7-2

पुस्तक का नाम :
शोध विविधा

संपादक
डॉ. राहुल शुक्ला
डॉ. हरिणी रानी आगर

कापीराइट
© प्रकाशक

प्रकाशक :
संकल्प प्रकाशन
1560/14, नई बस्ती मकरीपुरवा, बृहस्पति मन्दिर
चौराहा, कानपुर-208 021 (उ.प्र.)
दूरभाष : 094555-89663, 07007-40872
Email : sankalpprakashankanpur@gmail.com

शब्द सज्जा :
रुद्र ग्राफिक्स, कानपुर

मुद्रक :
सिध्दार्थ डिजिटल प्रेस, दिल्ली

प्रथम संस्करण 2020

मूल्य : 595/-

**Sodh Vividha**
*Collection of Qualitative Peer reviewed and Referred Research Paper of Languages, Literature & Humanities in the form of book Chapter*
Editor : Dr. Rahul Shukla, Dr. Harini Rani Aagar
Price : Five Hundred Ninty Five Only.

डॉ. जयश्री शुक्ला
२९.०१.२०२०

*जिन खोजा तिन पाइयाँ, गहरे पानी पैठि।*
*मैं बपुरा बूड़न डरा, रहा किनारे बैठि।।*
*Errors like straws upon the Surface flow*
*One who is in the search of truth Must dive below*

**समर्पण**

उन तमाम सृजनशील,
प्रतिभाशाली, समर्पित
शोधार्थियों के नाम;
जिन्हें शोध-सृजन की
अपनी अभिव्यक्ति के एक
सर्वसुलभ, सार्थक, सशक्त
मंच की वर्षों से तलाश है...

ISBN : 978-81-942779-7-2

पुस्तक का नाम :
शोध विविधा

संपादक
डॉ. राहुल शुक्ला
डॉ. हरिणी रानी आगर

कापीराइट
© प्रकाशक

प्रकाशक :
संकल्प प्रकाशन
1569/14, नई बस्ती बक्तौरीपुरवा, बृहस्पति मन्दिर
नौबस्ता, कानपुर-208 021 (उ.प्र.)
दूरभाष : 094555-89663, 070077-49872
Email : sankalpprakashankanpur@gmail.com

शब्द सज्जा :
रुद्र ग्राफिक्स, कानपुर

मुद्रक :
डिवाईन डिजिटल प्रेस, दिल्ली

प्रथम संस्करण 2020

मूल्य : 595/-

**Sodh Vividha**
*Collection of Qualitative Peer reviewed and Referred Research Paper of Languages, Literature & Humanitites in the form of book Chapter*
Editor : Dr. Rahul Shukla, Dr. Harini Rani Aagar
Price : Five Hundred Ninty Five Only.

डॉ. जयश्री शुक्ल
29.01.2020

*जिन खोजा तिन पाइंयाँ, गहरे पानी पैठि।*
*मैं बपुरा बूड़न डरा, रहा किनारे बैठि।।*
*Errors like straws upon the Surface flow,*
*One who is in the search of truth Must dive below.*

**समर्पण**

उन तमाम सृजनशील,
प्रतिभाशाली, समर्पित
शोधार्थियों के नाम;
जिन्हें शोध-सृजन की
अपनी अभिव्यक्ति के एक
सर्वसुलभ, सार्थक, सशक्त
मंच की वर्षों से तलाश है...

# अनुक्रम


1. रीतिकवि घनानंद की प्रासंगिकता — 09
**डॉ. डी. एस. ठाकुर**
2. मुक्तिबोध के काव्य में मूल्य-चेतना — 13
**डॉ. शेख शहेनाज अहेमद**
3. कोई सरहद इन्हें न रोके — 17
('जिस लाहौर नई देख्या ओ जम्याई नई' के विशेष संदर्भ में)
**डॉ. नानासाहेब गायकवाड़ 'संगीत'**
4. रामकथा के आदर्श पात्रों का चरित्रांकन — 21
(डॉ. रामकुमार वर्मा के एकांकियों के विशेष संदर्भ में)
**डॉ. धीरज जनार्धन व्हत्ते**
5. रत्नकुमार सांभरिया की कहानियों में स्त्री-विमर्श — 26
**प्रा. काळे सुभाष आप्पासाहेब**
6. दलित आत्मकथा 'जूठन' का संत्रास — 29
**डॉ. एम.एल. पाटले**
7. नरेशचन्द्र सक्सेना 'सैनिक' के साहित्य में आदर्श स्थापना : एक अनुशीलन — 33
**डॉ. शिवप्रताप सिंह**
8. भारतीय संगीत का पौराणिक इतिहास — 37
**डॉ. एम.आर. आगर, डॉ. हरिणी रानी आगर**
9. भारतीय संस्कृति विमर्श — 40
**डॉ. मंजुला पांडेय**
10. कविवर पं. अनूप शर्मा : व्यक्तित्व एवं विचारधारा — 46
**डॉ. शिवपाल सिंह**
11. हरिशंकर परसाई के व्यंग्य साहित्य में चित्रित शैक्षणिक विसंगतियां : एक अनुशीलन — 52
**डॉ. पंकज कुमार यादव**
12. समकालीन हिंदी कहानी में विद्रोह के स्वर — 58
**डॉ. (श्रीमती) परमजीत पाण्डेय**
13. धर्मशास्त्रों में सामाजिक समरसता — 63
**डॉ. (श्रीमती) अंजू शुक्ला**
14. जनजातीय महिला-विकास एवं वैश्वीकरण — 68
**डॉ. (सुश्री) भावना कमाने**
15. कृष्णा सोबती की कहानियों में मनोवैज्ञानिकता — 72
**डॉ. नागलगिद्दे मारुति**
16. छत्तीसगढ़ में ग्रामीण तथा नगरीय जनसंख्या का भौगोलिक अध्ययन — 78
**श्रीमती अर्चना गढ़वाल**
17. गिरिराज किशोर के औपन्यासिक साहित्य में चित्रित आर्थिक परिदृश्य — 83
(पूंजीवाद एवं सामन्तवाद के विशेष संदर्भ में)
**डॉ. संदीप कुमार त्रिपाठी**
18. भारतीय कृषि-श्रमिकों की दशा : एक अनुशीलन — 90
**डॉ. सत्येन्द्र सिंह**
19. भारत में समावेशी शिक्षा : चुनौतियां एवं रणनीतियां — 93
**आशीष कुमार, अरुण कुमार**
20. अठारह सौ सत्तावन का स्वाधीनता आन्दोलन और साहित्य — 98
**डॉ. राजीव सक्सेना**
21. मानवीय मूल्यों की आधुनिक प्रासंगिकता — 103
(कालिदास के रूपकसाहित्य के विशेष संदर्भ में)
**डॉ. संतोष कुमार कुशवाहा**
22. रामचरितमानस व आधुनिक रामकाव्य में अध्यात्म एवं दर्शन — 107
**डॉ. मनोजकुमार त्रिवेदी**
23. गोविन्द मिश्र कृत 'पांच आंगनों वाला घर' उपन्यास का शैलीगत अध्ययन — 115
डॉ. तुकाराम चाटे
24. महाकवि बिहारी का सामाजिक –राजनीतिक युगबोध — 120
डॉ. अनिल कुमार पारीक
25. उपभोक्ता सशक्तिकरण (जांजगीर के विशेष संदर्भ में) — 125
डॉ. (श्रीमती) मंजुलता कश्यप
26. पारिजात की खोज में नासिरा शर्मा का जीवन — 133
डॉ. हरगोविंद टेंभरे
27. हिन्दी की वर्तमान दशा और सुधार हेतु सुझाव — 136
डॉ. निधि कश्यप
नीतू गुप्ता
28. भारतीय संस्कृति के लोकप्रतीक — 139
डॉ. (श्रीमती) जयश्री शुक्ला
29. भारतीय संस्कृति की अवधारणा — 143
डॉ. सुनीता राठौर
30. पं० माखनलाल चतुर्वेदी : व्यक्तित्व एवं रचना–प्रक्रिया के विविध आयाम — 148
डॉ. राहुल शुक्ला, सुधीर कुमार

NAAC

# गाँधीवादी विचारों की वर्तमान प्रासंगिकता

## Relevance of Gandhian Thoughts in Present Scenario


**संरक्षक**

श्री अनुराग शुक्ल

**संपादक**

डॉ० (श्रीमती) अंजू शुक्ला



संप्र

**संकल्प प्रकाशन**

कानपुर (उ.प्र.)

**ISBN :** 978-81-944964-2-7

**पुस्तक का नाम :**
गाँधीवादी विचारों की वर्तमान प्रासंगिकता
**संपादक**
डॉ० (श्रीमती) अंजू शुक्ला
**© प्रकाशक**
**प्रकाशक :**
**संकल्प प्रकाशन**
1569/14 नई बस्ती बक्तौरीपुरवा, बृहस्पति मन्दिर
नौबस्ता, कानपुर-208 021
दूरभाष : 094555-89663, 070077-49872
Email : sankalpprakashankanpur@gmail.com

**शब्द सज्जा :**
रुद्र ग्राफिक्स, कानपुर

**मुद्रक :**
आर्यन डिजिटल प्रेस, दिल्ली

**प्रथम संस्करण 2020**

**मूल्य :** 795/-

**Relevance of Gandhian Thoughts in Present Scenario**
Editor : Dr. Smt. Anju Shukla
Price : Seven Hundred Ninty Five Only.

**सहयोगी संपादक**

*डॉ. के. के. शर्मा*
*प्रो. राकेश कुमार गुप्ता*
*डॉ. मनीष तिवारी*
*डॉ. एम.एस. तम्बोली*
*शैलेन्द्र कुमार तिवारी*
*अरुण कुमार*

# अनुक्रम


1. समाज कल्याण के आधार पर गाँधीवादी विचार — 15
**डॉ. (श्रीमती) अंजू शुक्ला**
2. वर्तमान में महात्मा गाँधी के आर्थिक विचारों की प्रासंगिकता — 21
**डॉ. शेख शहेनाज अहेमद**
3. गाँधी युग में महिलाओं की स्थिति — 24
**डॉ. जयश्री शुक्ल**
4. गाँधी दर्शन — 29
**डॉ. नागलगिद्दे मारुति**
5. गाँधीजी का अहिंसा दर्शन — 32
**डॉ. (सुश्री) भावना कमाने**
6. भारतीय समाज व्यवस्था और गाँधी — 36
**डॉ. सपना कौर**
7. भारतीय राजनीति और गाँधी — 41
**डॉ. (श्रीमती) सुजाता सेमुएल**
8. गाँधीजी के सामाजिक विचारों की वर्तमान में प्रासंगिकता — 46
**शिखा श्रीवास्तव**
9. गाँधीवाद और हिंदी कविता — 49
**डॉ. (श्रीमती) गायत्री बाजपेयी, डॉ. अश्वनी कुमार बाजपेयी**
10. गाँधीजी के विचारों की वर्तमान में प्रासंगिकता — 51
**राहुल श्रीवास्तव**
11. गाँधीजी के विचारों के विभिन्न आयाम — 58
**डॉ.(श्रीमती) दुर्गा बाजपेयी, डॉ.(श्रीमती) शारदा दुबे**
12. भारतीय राजनीति, इतिहास और गाँधीवाद — 63
**प्रो. राकेश कुमार गुप्ता, डॉ. जैनेन्द्र कुमार पटेल**
13. भारतीय समाज व्यवस्था और गाँधी — 68
**प्रो. राकेश कुमार गुप्ता, डॉ. बी. जॉन, रवि प्रकाश चौधरी**
14. वर्तमान शिक्षा की चुनौतियाँ एवं गाँधी — 74
**डॉ. स्नेहलता निर्मलकर, अमर सिंह ठाकुर**
15. गाँधीजी के विचारों के विभिन्न आयाम — 80
**डॉ. स्नेहलता निर्मलकर, चन्द्रिका चौधरी**
16. भारतीय सामाजिक राजनीतिक व्यवस्था एवं गाँधीवाद — 86
**प्रो. राकेश कुमार गुप्ता, डॉ. शुचि शर्मा**
17. गाँधीजी की दृष्टि में ग्रामीण विकास — 91
**डॉ. एम. आर. आगर, डॉ. एच. आर. आगर**
18. बेरोजगारी एवं निर्धनता की समकालीन समस्या का गाँधीवाद विश्लेषण एवं समाधान — 97
**प्रो. राकेश कुमार गुप्ता, राकेश कुमार गिरि**
19. भारतीय सामाजिक व्यवस्था और गाँधीयन एक विचारों की प्रासंगिकता–एक समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण — 100
**डॉ. सुषमा शर्मा, डॉ. साधना सोम**
20. वर्तमान समय में गाँधीवादी विचारों की बढ़ती प्रासंगिकता — 102
**प्रो. राकेश कुमार गुप्ता, प्रो. संजय कुमार अग्रवाल**
21. भारतीय राजनीति इतिहास और गाँधीवाद — 104
**डॉ. स्मृतिरानी प्रकाश**
22. गाँधीजी की बेसिक शिक्षा योजना — 106
**डॉ. निशी सिंह**
23. महात्मा गाँधी के आर्थिक विचार — 108
**प्रो. राकेश कुमार गुप्ता, डॉ. काजल मोइत्रा**
24. महात्मा गाँधी एवं वर्तमान वैश्विक परिदृश्य — 111
**डॉ. अनिल कुमार पारीक**
25. वर्तमान शिक्षा की चुनौतियाँ एवं गाँधी — 117
**श्री शैलेन्द्र कुमार तिवारी**
26. गाँधी के विचारों की वर्तमान प्रासंगिकता — 119
**डॉ. सुनीता यादव**
27. महात्मा गाँधी का शिक्षा दर्शन — 122
**अर्चना ठाकुर**
28. गाँधी दर्शन : एक व्यावहारिक अध्ययन — 124
**रीतु पाण्डेय**
29. गाँधी का सामाजिक चिन्तन — 126
**डॉ. सुरुचि मिश्रा**
30. वर्तमान विश्व और महात्मा गाँधी के विचारों की प्रासंगिकता — 129
**प्रा. डॉ. अर्जुन कसबे शंकर राव**
31. गांधी जी का अर्थ दर्शन — 132
**डॉ. (श्रीमती) संजू पाण्डेय**
32. भारतीय नवजागरण और गाँधीवाद — 136
**डॉ. राहुल शुक्ला, डॉ. संदीप कुमार त्रिपाठी**

# सूरसागर में लोकतांत्रिक मूल्य और वर्तमान समाज

डॉ. (श्रीमती) फेदोरा बरवा

संकल्प प्रकाशन
कानपुर (उ.प्र.)

ISBN : 978-81-942779-8-9

पुस्तक का नाम :
सूरसागर में लोकतांत्रिक मूल्य और वर्तमान समाज

लेखक
डॉ.(श्रीमती) फेदोरा बरवा

कापीराइट
प्रकाशक

प्रथम संस्करण 2020

मूल्य : 695/-

प्रकाशक :
संकल्प प्रकाशन
1569/14 नई बस्ती बक्तौरीपुरवा, बृहस्पति मन्दिर
नौबस्ता, कानपुर-208 021
दूरभाष : 094555-89663, 070077-49872
Email : sankalpprakashankanpur@gmail.com

शब्द सज्जा :
रुद्र ग्राफिक्स, कानपुर

मुद्रक :
साक्षी आफॅसेट, कानपुर

**Sursagar Mein Loktantrik Mulya aur Vartmaan Samaj**
By : Dr. (Smt.) Fedora Barwa
Price : Six Hundred Ninty Five Only.

## समर्पण

*स्वर्गीय*
*माताजी को*
*जिन्होंने मुझे जीवन की*
*समझ और जिन्दगी में*
*आगे बढ़ने की प्रेरणा दी*
*मेरे सभी प्रियजनों*
*एवम्*
*मेरे अकादमी पथ प्रदर्शक*
*डॉ. रवेन्द्र कुमार साहू को*
*सादर...*

NAAC

# शोधसार

भाषा, साहित्य एवं मानविकी के पूर्व समीक्षित तथा संदर्भित गुणवत्तापूर्ण शोधआलेखों का पुस्तक अध्याय के रूप में संकलन

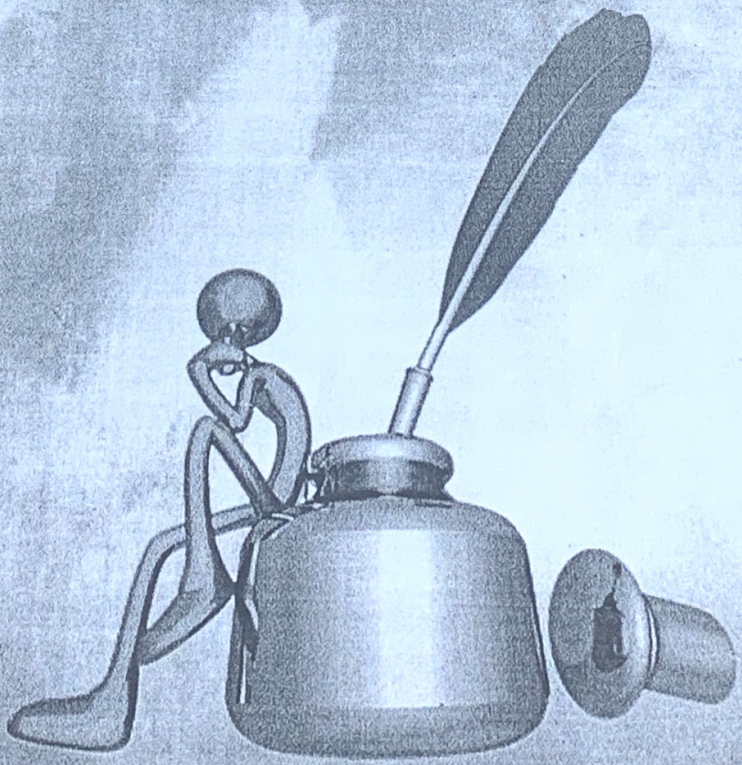

संपादक
डॉ. राहुल शुक्ला

ISBN : 978-81-944964-7-2

पुस्तक का नाम :
शोधसार

संपादक
डॉ. राहुल शुक्ला

प्रथम संस्करण, 2020

कापीराइट
© प्रकाशक

मूल्य : 595/-

प्रकाशक :
संकल्प प्रकाशन
1569/14, नई बस्ती बक्तौरीपुरवा, बृहस्पति मन्दिर
नौबस्ता, कानपुर-208 021 (उ.प्र.)
दूरभाष : 094555-89663, 070077-49872
Email : sankalpprakashankanpur@gmail.com

शब्द सज्जा :
रुद्र ग्राफिक्स, कानपुर

मुद्रक :
सार्थक प्रेस, कानपुर

**Sodhsaar**
*Collection of Qualitative Peer-reviewed and Referred Research Paper of Languages, Literature & Humanities in the form of book Chapter*
Editor : Dr. Rahul Shukla
Price : Five Hundred Ninty Five Only.

# 13

# धर्म एवं संस्कृति

डॉ. (श्रीमती) फेदोरा बरवा

धर्म और संस्कृति का मानव जीवन से घनिष्ठ संबंध है। संस्कृति जहाँ हमारे मूल्यों, आदर्शों और संस्कारों का समुच्चय है। संस्कृति एक व्यवस्था है जिसमें हम जीवन के प्रतिमानों, व्यवहार के तरीकों, अनेकानेक भौतिक एवं अभौतिक प्रतीकों, परम्पराओं, विचारों, सामाजिक मूल्यों, मानवीय क्रियाओं और अविष्कारों को शामिल करते हैं। वहीं धर्म नैतिक मूल्यों का आचरण है, धर्म वह पवित्र अनुष्ठान है जिससे चेतना का शुद्धिकरण होता है, धर्म वह तत्व है जिसके आचरण से व्यक्ति अपने जीवन को चरितार्थ कर पाता है। धर्ममय कर्म ही संस्कृति के अंग हो सकते हैं। यद्यपि धर्म और संस्कृति में पर्याप्त अन्तर है, पर धर्म जिन तत्वों पर आधारित है संस्कृति भी उनसे संबंधित रहती है। सभी राष्ट्रों को अपना धर्म एवं संस्कृति प्यारी रही है। अध्यात्मिकता के प्रति प्रेम, अध्यात्म में आस्था हमारी हिंदू संस्कृति की सबसे बड़ी विशेषता रही है। यहाँ प्रश्न उठता है कि धर्म और संस्कृति क्या है? "संस्कृति किसी समाज में गहराई तक व्याप्त गुणों के समग्र रूप का नाम है, जो उस समाज के सोचने विचारने, कार्य करने, खाने–पीने, बोलने, नृत्य, गायन, साहित्य, कला आदि में परिलक्षित होती है।"[1]

'संस्कृति' शब्द संस्कृत से लिया गया है। संस्कृत और संस्कृति दोनों ही शब्द संस्कार से बने है। संस्कार का अर्थ है कुछ कृत्यों की पूर्ति करना। संस्कृति शब्द संस्कृत भाषा की 'कृ' (करना) धातु से बना है। इस धातु से तीन शब्द बनते हैं। 'प्रकृति' (मूल स्थिति) 'संस्कृति' (परिष्कृत स्थिति) और 'विकृति' (अवनति की स्थिति)। जब प्रकृत या कच्चा माल परिष्कृत किया जाता है तो यह संस्कृत हो जाता है और जब यह बिगड़ जाता है तो विकृत हो जाता है। अंग्रेजी में संस्कृति के लिये 'कल्चर' शब्द का प्रयोग किया जाता है जो लैटिन भाषा के 'कल्ट या कल्टस' से लिया गया है, जिसका अर्थ है– जोतना, विकसित करना या परिष्कृत करना और पूजा करना। संक्षेप में हम कह सकते हैं कि किसी वस्तु को यहाँ तक संस्कारित और परिष्कृत करना कि इसका अग्रिम उत्पाद हमारी प्रशंसा और सम्मान प्राप्त कर सके। यह ठीक उसी तरह है जैसे संस्कृत भाषा का शब्द संस्कृति।

संस्कृति को विभिन्न विद्वानों द्वारा परिभाषित भी किया गया है। राबर्ट बीस्टीड ने 'द सोशल आर्डर' में संस्कृति को परिभाषित करते हुए लिखा है–

# शोध विविधा

भाषा, साहित्य एवं मानविकी के पूर्व समीक्षित तथा संदर्भित गुणवत्तापूर्ण
शोधपत्रों का पुस्तक अध्याय के रूप में संकलन

संपादक
डॉ. राहुल शुक्ला
डॉ. हरिणी रानी आगर

संकल्प प्रकाशन
कानपुर (उ.प्र.)

ISBN : 978-81-942779-7-2

पुस्तक का नाम :
शोध विविधा

संपादक
डॉ. राहुल शुक्ला
डॉ. हरिणी रानी आगर

कापीराइट
© प्रकाशक

प्रकाशक :
संकल्प प्रकाशन
1569/14, नई बस्ती बक्तौरीपुरवा, बृहस्पति मन्दिर
नौबस्ता, कानपुर-208 021 (उ.प्र.)
दूरभाष : 094555-89663, 070077-49872
Email : sankalpprakashankanpur@gmail.com

शब्द सज्जा :
रुद्र ग्राफिक्स, कानपुर

मुद्रक :
डिवाईन डिजिटल प्रेस, दिल्ली

प्रथम संस्करण 2020

मूल्य : 595/-

**Sodh Vividha**
*Collection of Qualitative Peer reviewed and Referred Research Paper of Languages, Literature & Humanitites in the form of book Chapter*
Editor : Dr. Rahul Shukla, Dr. Harini Rani Aagar
Price : Five Hundred Ninty Five Only.

29.01.2020

*जिन खोजा तिन पाइयाँ, गहरे पानी पैठि।*
*मैं बपुरा बूड़न डरा, रहा किनारे बैठि।।*
*Errors like straws upon the Surface flow,*
*One who is in the search of truth Must dive below.*

**समर्पण**

उन तमाम सृजनशील,
प्रतिभाशाली, समर्पित
शोधार्थियों के नाम;
जिन्हें शोध-सृजन की
अपनी अभिव्यक्ति के एक
सर्वसुलभ, सार्थक, सशक्त
मंच की वर्षों से तलाश है...

# अनुक्रम


1. रीतिकवि घनानंद की प्रासंगिकता — 09
**डॉ. डी. एस. ठाकुर**

2. मुक्तिबोध के काव्य में मूल्य-चेतना — 13
**डॉ. शेख शहेनाज अहेमद**

3. कोई सरहद इन्हें न रोके — 17
('जिस लाहौर नई देख्या ओ जम्याई नई' के विशेष संदर्भ में)
**डॉ. नानासाहेब गायकवाड़ 'संगीत'**

4. रामकथा के आदर्श पात्रों का चरित्रांकन — 21
(डॉ. रामकुमार वर्मा के एकांकियों के विशेष संदर्भ में)
**डॉ. धीरज जनार्धन व्हत्ते**

5. रत्नकुमार सांभरिया की कहानियों में स्त्री-विमर्श — 26
**प्रा. काळे सुभाष आप्पासाहेब**

6. दलित आत्मकथा 'जूठन' का संत्रास — 29
**डॉ. एम.एल. पाटले**

7. नरेशचन्द्र सक्सेना 'सैनिक' के साहित्य में आदर्श स्थापना : एक अनुशीलन — 33
**डॉ. शिवप्रताप सिंह**

8. भारतीय संगीत का पौराणिक इतिहास — 37
**डॉ. एम.आर. आगर, डॉ. हरिणी रानी आगर**

9. भारतीय संस्कृति विमर्श — 40
**डॉ. मंजुला पांडेय**

10. कविवर पं. अनूप शर्मा : व्यक्तित्व एवं विचारधारा — 46
**डॉ. शिवपाल सिंह**

11. हरिशंकर परसाई के व्यंग्य साहित्य में चित्रित शैक्षणिक विसंगतियां : एक अनुशीलन — 52
**डॉ. पंकज कुमार यादव**

12. समकालीन हिंदी कहानी में विद्रोह के स्वर — 58
**डॉ. (श्रीमती) परमजीत पाण्डेय**

13. धर्मशास्त्रों में सामाजिक समरसता — 63
**डॉ. (श्रीमती) अंजू शुक्ला**

14. जनजातीय महिला-विकास एवं वैश्वीकरण — 68
**डॉ. (सुश्री) भावना कमाने**

15. कृष्णा सोबती की कहानियों में मनोवैज्ञानिकता — 72
**डॉ. नागलगिद्दे मारुति**

16. छत्तीसगढ़ में ग्रामीण तथा नगरीय जनसंख्या का भौगोलिक अध्ययन — 78
**श्रीमती अर्चना गढ़वाल**

17. गिरिराज किशोर के औपन्यासिक साहित्य में चित्रित आर्थिक परिदृश्य — 83
(पूंजीवाद एवं सामन्तवाद के विशेष संदर्भ में)
**डॉ. संदीप कुमार त्रिपाठी**

18. भारतीय कृषि-श्रमिकों की दशा : एक अनुशीलन — 90
**डॉ. सत्येन्द्र सिंह**

19. भारत में समावेशी शिक्षा : चुनौतियां एवं रणनीतियां — 93
**आशीष कुमार, अरुण कुमार**

20. अठारह सौ सत्तावन का स्वाधीनता आन्दोलन और साहित्य — 98
**डॉ. राजीव सक्सेना**

21. मानवीय मूल्यों की आधुनिक प्रासंगिकता — 103
(कालिदास के रूपकसाहित्य के विशेष संदर्भ में)
**डॉ. संतोष कुमार कुशवाहा**

22. रामचरितमानस व आधुनिक रामकाव्य में अध्यात्म एवं दर्शन — 107
**डॉ. मनोजकुमार त्रिवेदी**

23. गोविन्द मिश्र कृत 'पांच आंगनों वाला घर' उपन्यास का शैलीगत अध्ययन — 115
डॉ. तुकाराम चाटे

24. महाकवि बिहारी का सामाजिक –राजनीतिक युगबोध — 120
डॉ. अनिल कुमार पारीक

25. उपभोक्ता सशक्तिकरण (जांजगीर के विशेष संदर्भ में) — 125
डॉ. (श्रीमती) मंजुलता कश्यप

26. पारिजात की खोज में नासिरा शर्मा का जीवन — 133
डॉ. हरगोविंद टेंभरे

27. हिन्दी की वर्तमान दशा और सुधार हेतु सुझाव — 136
डॉ. निधि कश्यप
नीतू गुप्ता

28. भारतीय संस्कृति के लोकप्रतीक — 139
डॉ. (श्रीमती) जयश्री शुक्ला

29. भारतीय संस्कृति की अवधारणा — 143
डॉ. सुनीता राठौर

30. पं० माखनलाल चतुर्वेदी : व्यक्तित्व एवं रचना–प्रक्रिया के विविध आयाम — 148
डॉ. राहुल शुक्ला, सुधीर कुमार

NAAC

इक्कीसवीं सदी का नव्य विमर्श

# विकलांग-दिव्यांग-विमर्श

सम्पादक

डॉ. रेखा दुबे

का अर्थ प्रकट कर दिया था वह सच में नर्मदा पुत्री साबित हुई और [illegible] लोगों को बचाकर जीवनदान दिया जिसके प्रतिफल में बहादुर बच्ची [illegible] उसे भी देश के राष्ट्रपति द्वारा 26 जनवरी, 1974 को उस [illegible] "सरस्वती" को उसके अद्भुत साहस और वीरता के लिए देश का साहसी [illegible] का "राष्ट्रीय शौर्य पुरस्कार" से सम्मानित किया गया।

इस तरह संग्रह की सभी कहानियाँ अपने अंदर अनेक साहसी [illegible] जीवनगाथा को समेटे उनकी साहस और वीरता का बखान करती है [illegible] संग्रह के फ्लैप पर यशस्वी साहित्यकार डॉ. चम्पा सिंह जी लिखती हैं

"विकलांग विमर्श की कहानियाँ" का प्रकाशन ऐतिहासिक घटना [illegible] सूत्रपात ही कहा जाएगा। ये कहानियाँ वास्तविकता को विज्ञ ही नहीं करती, [illegible] अन्तस् को ऊर्जस्वित कर मानवीय मूल्यों का मान रखने के लिए संवेदना [illegible] सोर्द्र भी कर जाती है। इसमें कथाकार कल्पना का उतना ही सहारा लेता है जिससे सच्चाई को संबल मिले और हृदय को संवेदनापूरित होने का अवसर भी। यह कल्पना यथार्थ से जुगलबंदी करके उत्सुकता को उपस्थित रखकर उल्लेखनीय बन जाती है।

आज विकलांग विमर्श पर हमारे पास अनेक शोधग्रंथ उपलब्ध हैं और कई लिखे जा रहे हैं। अनेक साहित्यकार और शोधार्थी इस पर काम कर रहे हैं। अब तो इसके लिए एक शोधपीठ भी स्थापित कर दिया गया है जिसमें सफलतापूर्वक अपना शोध पूर्ण किया जा सकता है, शोधपीठ के प्रमुख डॉ. विनय कुमार पाठक के संरक्षण में।

-डॉ. राजेश कुमार मानस
मानस भवन, लक्ष्मी चौक, चिंगराजपारा,
बिलासपुर (छ.ग.) 495006
मो. 6260891924
E-mail. dr.rajeshmanas65@gmail.com



# तीसरा पहिया की व्यथा-कथा

डॉ. क्रांति कुमार सिन्हा

डॉ. सुरेखा ठक्कर की 'तीसरा पहिया' अपंग अपाहिज के प्रतीकार्थ प्रयुक्त कहानी का शीर्षक है जो विकलांगता बोध को तो उजागर करता ही है, एक तीसरा पहिया का दूसरे तीसरे पहिए से मिलकर जीवन को सुगम बनाने और दो अर्धवृत्त को एक पूर्ण वृत्त बनाने का सहज-स्वाभाविक संयोजन है, जिसे तथाकथित समाज के ठेकेदार बर्दाश्त नहीं कर पाते, इस तरह यह विकलांग-विमर्श के प्रादर्श को प्रस्तुत करती है। अनुज और नजमा तीसरे पहिए के प्रश्रय से सहयात्री का सहज जीवन जीते, परस्पर सद्भाव व साहित्यिक उद्भाव को संजोते, विकलांगता को विस्मृत करने और उल्लास को उत्सर्जित करने की जीवन-पद्धति में निमग्न थे उनका जीवन आध्यात्मिक आधार पर अग्रसित था। दोनों विकलांगता का दंश झेलते हुए भी आत्मिक आनंद के अन्वेषण में आबद्ध थे। उनकी पीड़ा के प्रति बेपरवाह समाज उनके द्वारा निर्मित आध्यात्मिक आनंद को स्त्री-पुरुष और हिंदू-मुस्लिम के रूप में करके उसे समाप्त करने मे पूरी ताकत झोंक देता है।

अनुज तीस वर्षों से अपाहिज का जीवन संघर्ष करते हुए दु:ख झेल रहा था। जब तक उसके माता-पिता जीवित थे, वह एम.ए. कर चुका था। उनकी मृत्यु के बाद भैया-भाभी ने उसकी उपेक्षा की। वह सचमुच अब अनाथ हो गया लेकिन उसने आपा नहीं खोया। दो वर्ष की अवस्था में ही पोलियो के प्रकोप से उसके कटि प्रदेश का अधोभाग निस्पंद हो गया। स्वभावत: पैर पतले व कमजोर थे लेकिन तीन पहिया साइकिल का सहारा, आत्मविश्वास का आश्रय और तीव्र ज्ञान शक्ति ने उसे गंतव्य पथ का राही बना दिया। संघर्ष का पथिक कभी निराश नहीं हुआ-

अनुज की जबरदस्त जिजीविषा, उसकी कमजोरियों को ताकत में बदल देती। एम.ए. और फिर बी.एड. करके वह एक अनाथाश्रम की स्कूल में

# हिन्दी साहित्य में व्यक्त गांधी

डॉ. राम गोपाल सिंह जादौन

[28]

## सत्य-अहिंसा और महात्मा गांधी

डॉ. क्रान्ति कुमार सिन्हा

भारत के राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जिन्हें हम सब प्रिय नाम [illegible] पुकारते हैं, गांधी जी ने अपना जीवन स्वतंत्रता प्राप्ति हेतु समर्पित [illegible] गांधी जी के जीवन का मुख्य उद्देश्य सत्य और अहिंसा के मार्ग पर [illegible] सच्ची स्वतंत्रता प्राप्त करना था। गांधी जी ने सदैव हिंसा और झूठ का [illegible] कर सत्य के पथ पर आगे बढ़ते हुए जीवन के उद्देश्यों को प्राप्त [illegible] दिया। उनका मानना था कि जीवन में सफल होने हेतु प्रत्येक व्यक्ति [illegible] का सही सदुपयोग करना चाहिए। इस हेतु समय का उचित निर्धारण [illegible] है। महात्मा गांधी द्वारा दिखाए गए अहिंसा के मार्ग का अनुसरण [illegible] बाद के अनेक नेताओं ने किया है। गांधी जी के अनुसार सत्य और [illegible] ही सिक्के के दो पहलू हैं। सत्य को अहिंसा के मार्ग पर चलकर ही [illegible] जा सकता है। इग्लैण्ड में बैरिस्टर की पढ़ाई करते समय माँ को [illegible] कि—"मैं माँस नहीं खाऊँगा और शराब का सेवन नहीं करूँगा" का [illegible] दृढ़ता से पालन किया। अपने आचार-विचार और संस्कार पर पश्चिमी [illegible] प्रभाव नहीं पड़ने दिया। दादा अब्दुल्ला एण्ड कम्पनी के बुलावे पर [illegible] आने का आमंत्रण मिलने पर गांधी जी ने दक्षिण अफ्रीका की [illegible] 1893 में विदेश यात्रा के दौरान उन्होंने महसूस किया कि विदेशों में [illegible] प्रति दोयम दर्जे का व्यवहार किया जाता है। विदेशों में भारतीयों के [illegible] दर्जे के व्यवहार से उनका मन व्यथित रहने लगा। सन् 1893 में ट्रेन [illegible] के डिब्बे में एक अंग्रेज द्वारा किए गए दुर्व्यवहार से और काला [illegible] पुकारे जाने तथा दक्षिण अफ्रीका के नेटाल की राजधानी मेरित्सबर्ग में [illegible] प्रथम श्रेणी डिब्बे से समान सहित उतार दिए जाने से गांधी जी ने [illegible] अपमानित महसूस किया। उनके आहत मन में यह प्रश्न उठा कि [illegible] यह भेदभाव क्यों? आखिर जन्म, परिवार, जाति और धर्म के आधार पर [illegible] को मनुष्य से अलग क्यों समझा जाता है? उन्होंने निर्णय लिया कि वे [illegible]



[illegible] और देश में व्याप्त इस प्रकार के भेदभाव को मिटाने हेतु समर्पित [illegible] उन्होंने इस तरह की असमानता व भेदभाव के विरूद्ध संघर्ष [illegible] किया। दक्षिण अफ्रीका में भारतीयों पर हो रहे अत्याचारों व भेदभाव [illegible] गांधी जी ने जो संघर्ष प्रारम्भ किया, वह आगे चल कर भारतीयों में जन [illegible] करने का कारण बना।

[illegible] जी ने अपने जीवन में सत्य और अहिंसा के साथ स्वावलम्बन पर भी [illegible] उनका मानना था कि मनुष्य को स्वावलम्बी होना चाहिए। जहाँ तक [illegible] अपने कार्य स्वयं करने के प्रयास करने चाहिए। एक बार प्रिटोरिया [illegible] नाई के पास गए। नाई ने बदतमीजी की और काले आदमी के बाल [illegible] मना कर दिया। गांधी जी उसी समय बाल काटने का समान खरीद लाए [illegible] अपने बाल खुद ही काट लिए। आगे के बाल काटने में तो थोड़ी बहुत [illegible] गई किन्तु पीछे के बाल उन्होंने बिगाड़ लिए। वह अजीव लग रहे [illegible] न्यायालय में उनके मित्र उन पर हँसने लगे। उन्होंने पूछा—"यह [illegible] क्या हुआ है, गांधी? क्या चूहों ने इन्हें कुतर डाला?" गांधी जी [illegible] दिया—"नहीं भाई, मैंने अपने बाल खुद ही काटे हैं।"[1] फिर गांधी [illegible] भोजन में भी परिवर्तन शुरू कर दिया। वह इस बात में विश्वास करते [illegible] फलों और कंद मूलों पर निर्भर रहा जाए तो आदमी संयमी रह [illegible] और आध्यात्मिक शक्ति प्राप्त कर सकता है। अपने भोजन के साथ [illegible] किए। वे इस निर्णय पर पहुँचे कि उपवास से आत्म बल बढ़ता [illegible] में भारत लौटने पर गांधी जी को कांग्रेस के कई नेताओं; जैसे—[illegible] मेहता, लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक, गोपाल कृष्ण गोखले आदि [illegible] अवसर प्राप्त हुआ। सन् 1902 में दक्षिण अफ्रीका के भारतीयों के [illegible] गांधी जी नेटाल पहुँच गए और भारतीय शिष्ट मण्डल का नेतृत्व [illegible] तत्कालीन ब्रिटिश उपनिवेश मंत्री जोसेफ चेंबर लेन से मिले। भारतीयों [illegible] के लिए दक्षिण अफ्रीका में गांधी जी ने निरन्तर संघर्ष किया। [illegible] दक्षिण अफ्रीका में 'इंडियन आपीनियन' अखबार का प्रकाशन किया। [illegible] में रहते हुए गांधी जी ने वर्ष 1904 में अपने मित्र मदनजीत की [illegible] 'इंडियन आपीनियन' नाम का एक समाचार पत्र निकाला। मनसुख [illegible] संपादक थे। गांधी जी 'इंडियन ओपीनियन' अखबार के संबंध में [illegible] यह अखबार साप्ताहिक था जैसा कि आज भी है। शुरू में तो वह [illegible] हिंदी, तमिल और अंग्रेजी में निकलता था लेकिन मैंने देखा कि तमिल [illegible] संस्करण नाममात्र के थे। मुझे लगा कि उनके द्वारा समाज की कोई [illegible] इन संस्करणों को जारी रखने में मुझे असत्य का आभास हुआ।

इस पुस्तक के सर्वाधिकार सुरक्षित हैं। प्रकाशक की लिखित अनुमति के बिना इस पुस्तक या इसके किसी भी अंश का किसी भी माध्यम से अथवा ज्ञान के संग्रहण एवं पुर्नप्रयोग की प्रणाली द्वारा, किसी भी रूप में, पुनरुत्पादित अथवा संचारित-प्रसारित नहीं किया जा सकता, इसे संक्षिप्त, परिवर्धित कर प्रकाशित करना कानूनी अपराध है।

ISBN 978-81-949710-2-3

प्रथम संस्करण 2021

© संपादक

पुस्तक : सुषम बेदी का रचना संसार

संपादक : प्रो. प्रदीप श्रीधर

प्रकाशक : विनय प्रकाशन

3ए-128, हंसपुरम्, कानपुर-208021 (उ.प्र.)

सम्पर्क : 09415731903, 09452971407

Email : vinayprakashankanpur@gmail.com

Website : www.vinayprakashan.com

मूल्य : 795.00

शब्द-सज्जा : विष्णु ग्राफिक्स, गल्ला मंडी, नौबस्ता, कानपुर-21

आवरण : गौरव शुक्ल, कानपुर-21

मुद्रण : पूजा प्रिण्टर्स, नौबस्ता, कानपुर-21

जिल्द-सज्जा : तबारक अली, पटकापुर, कानपुर-01

# 15

# सुषम बेदी कृत उपन्यास 'पानी केरा बुदबुदा' में व्यक्त स्त्री–पुरुष संबंध

– डॉ. नंदिनी तिवारी एवं श्रीमती चैताली सलूजा

सुषम बेदी जी भारतीय मूल की हैं एवं विगत कई वर्षों से अमेरिका में रहती हैं। भारतीय एवं पाश्चात्य संस्कृति को उन्होंने बहुत करीब से देखा है। इसलिये उनके उपन्यासों के कथानक में प्रायः दोनों संस्कृतियाँ रही हैं।

'पानी केरा बुदबुदा' उपन्यास में सुषम बेदी जी ने बदलते परिवेश में स्त्री–पुरुष के बदलते संबंधों को परत–दर–परत खोलने का सफल प्रयास किया है।

स्त्री और पुरुष समाज के दो महत्त्वपूर्ण अंग है। समाज ने विवाह के द्वारा स्त्री– पुरुष संबंध को वैधानिकता प्रदान की है। इनके संतुलित संबंध पर ही सामाजिक संतुलन निर्भर है। स्वस्थ सामाजिक वातावरण के लिए स्त्री–पुरुष सह–अस्तित्व आवश्यक है। सह–अस्तित्व के अभाव में एक स्त्री कैसे छटपटाहट, कुंठा, अकेलापन और अवसाद में अपना जीवन व्यतीत करती है, उसी का चित्रण है 'पानी केरा बुदबुदा' में।

उपन्यास की नायिका पिया एक डॉक्टर है जो भारतीय संस्कृति और मूल्यों के साथ पली–बढ़ी है। भारत में पति दामोदर की व्यावसायिक असफलता के बाद पिया पति के साथ अमेरिका आ जाती है। वह पति एवं अपने बच्चे के प्रति हर कर्तव्य को पूरी तरह निभाती है फिर भी पति हमेशा नाखुश रहता है और उसके साथ मार–पीट करता है, गाली देता है। पिया अपने पति से सम्मान चाहती थी जो उसे दामोदर से कभी नहीं मिला। पिया चाहती थी "उन दोनों के बीच एक समानान्तर रिश्ता हो जहाँ दोनों एक–दूसरे को सम्मान देते हुए जिंदगी गुजर करे। दामोदर अमरीका में रहते हुए भी वहाँ का यह मूलभूत मूल्य अपना नहीं पाया था, न ही बदलती हुई हिन्दुस्तानी औरत की आंतरिक जरूरतें ही समझ पाया था। औरत अगर घर और बाहर दोनों को सँभालने की योग्यता रखती है और बाहर की दुनिया में अपनी पुरुष जैसी या उससे ज्यादा ही योग्यता रखती है तो उसके लिए उसे अपने पुरुष से मान्यता भी चाहिए। आखिर उसके जीवन केन्द्र में तो उसका पुरुष ही



होता है। तब अगर वही उस योग्यता को नकार दे तो औरत का आत्म–विश्वास और आत्म–हत्या को धक्का खाएगा ही। अगर पुरुष का अपना अहं है और वह औरत से अपने अहं के सम्मान की अपेक्षा करता है तो औरत के अहं के प्रति वह संवेदनशील क्यों नहीं होता? पत्नी की इस जरूरत को क्यों नहीं समझना चाहता?"[1]

दामोदर के हिसाब से पत्नी का धर्म सिर्फ पति की सेवा और आज्ञा का पालन करना है। जबकि पिया घर की जिम्मेदारियों के निर्वहन में दामोदर की सहभागिता चाहती थी, साथ ही वह सहानुभूति भी चाहती थी पर दामोदर पारम्परिक सोच के विपरीत यह तो चाहता था कि पिया घर से बाहर निकल कर पैसा कमाए पर पुरुष सोच के अनुरूप चाहता था कि स्त्री होने के नाते घर के काम पिया को अकेले ही सँभालना है। दामोदर कहता है– "तू मुझ तक ही रहने दे पैसा सँभालने की बात। अपना चुप करके अस्पताल जाया कर और कमाया कर। इससे ज्यादा तुझे कुछ समझ नहीं। दखल मत दिया कर मेरे फैसलों में। मरद हूँ मैं इस घर का।"[2]

सामाजिक व्यवस्था में परिवार की महत्त्वपूर्ण धुरी नारी नाते हुए भी उसकी भावनाओं को हमेशा महत्त्वहीन समझा जाता रहा है। कभी वह समाज के कारण पीड़ित रही, कभी परिवार के माध्यम से कभी पति के द्वारा और अति महत्त्वाकांक्षा के कारण स्वयं द्वारा भी।

दामोदर के व्यवहार से आहत पिया यह समझ गई थी कि ज्यादा दिन वह इस रिश्ते के बोझ को ढो नहीं पाएगी। वह स्वतंत्र होना चाहती है। स्त्री की इस नयी मनोवृत्ति ने परिवार में पति–पत्नी के संबंधों को प्रभावित किया। घर और नौकरी की दोहरी जिम्मेदारी से स्त्री के मन में प्रेम की पुरानी अवधारणा बदल गयी। अब वह पति और बच्चों की सेवा करने वाली सेविका नहीं रही। दायित्व की नयी अनुभूतियों ने उसके विचारों में परिवर्तन ला दिया। "पिया अपने रिश्तों में सुख खोजना चाहती थी। रिश्ता जोड़ने का सुख हो, आह्लाद हो, सिर्फ जिम्मेदारी नहीं। पुरुष से प्यार और लाड़ मिले। पुरुष की चाह का सुख हो। वह पिया को सराहे, दुलारे। सुख और दायित्व दोनों का संतुलन रहे तो रिश्ता सुखकर होता है पर अगर दायित्व ही हावी रहे तो कहाँ तक निभाता चले कोई रिश्ता।"[3] दाम्पत्य संबंधों के बदलते रूप के कारण विवाह के प्रति लोगों का दृष्टिकोण बदल गया है। लोग विवाह को बंधन समझने लगे हैं, एक ऐसा बंधन जिसमें घुटन के अलावा और कुछ नहीं है। उपन्यास में मनोचिकित्सक अनुराग कहता है– "मैं तो करूँगा ही नहीं शादी। सड़ी–खासी जिंदगी में जंग लग जाता है। अपनी आजादी ही खत्म हो जाती है। बीवी जो कहे वह करो, न करो तो लड़ाई और करो तो उनका